# मैथिल ब्राह्मण संदेश

बृजस्थ मैथिल ब्राह्मणों की प्रमुख मासिक पत्रिका

कार्यालयः गली नं 4, ज्वालापुरी, अलीगढ़–202001 (उ0प्र0) मोबाईल नं0:9760689055

Whatsapp: 9259647216 (मैथिल ब्राह्मण संदेश ग्रुप), Paytm Account: 9259647216

Regd.: U.P.H.W. 23124/24-01-06 T.C. Dated: 30-08-1996

वर्ष–8, अंक–79, www.maithilbrahminmahasabha.in फरवरी–2020



## संरक्षक

1. रघुवीर सहाय शर्मा ''मैथिलेन्दु''एम0ए0बी0एड0 साहित्य रत्न राष्ट्रीय संयोजक, राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा (Mob) 8077033429
2. श्रीमती गायत्री देवी शर्मा, अलीगढ़ (Mob) 9058532152
4. रमेश चन्द्र शर्मा, दिल्ली, (Mob) 9312942251
5. सत्यप्रकाश शर्मा, आगरा, (Mob) 9219636927

## प्रधान सम्पादक

1. जयप्रकाश शर्मा, अलीगढ़, (Mob) 6395577830 एम0एस–सी0(वाटनी), एम0ए0(राज0), पूर्व प्रधानाचार्य

## कार्यकारी प्रधान सम्पादक

1. डॉ0 मोर मुकुट शर्मा, अलीगढ़, (Mob) 9997579211 एम0ए0(हिन्दी), एल–एल0बी0, पी–एच0डी0

## प्रबन्ध सम्पादक

1. चन्द्रदत्त वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, (Mob) 9760689055 स्वर्ण पदक प्राप्त (पंचगव्य चिकित्सा) (अलीगढ़)

## सम्पादक मण्डल

1. रमेश चन्द्र शर्मा (झाँसी) (Mob) 9936526677
2. राजेन्द्र प्रसाद शास्त्री (आगरा) (Mob) 9760746099
3. के0एस0 शर्मा (मथुरा) (Mob) 8630285841
4. पं0 पूरन चन्द्र शास्त्री (अलीगढ़) (Mob) 9412442343
5. डा.उपेन्द्र झा 'मैथिल' (हाथरस) (Mob) 9837484645
6. कोमल प्रसाद शर्मा (बिसावर) (Mob) 9719247433
7. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा (फ0बाद) (Mob) 9810195234
8. हरीशंकर मिश्र (फि0बाद) (Mob) 9927383141
9. अशर्फी लाल शर्मा (अवागढ़) (Mob) 6396959575
10. किशोर मिश्रा (दिल्ली) (Mob) 9811563927



## मुद्रक एवं प्रकाशक

स्वामी मैथिल ब्राह्मण सेवा–शिक्षा–संस्कार ट्रस्ट अलीगढ़ की ओर से प्रकाशक एवं सम्पादक जयप्रकाश शर्मा, 1/567–एच, गंगा बिहार, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़ द्वारा लिथो कलर प्रेस, अचल तालाब, जी0टी0 रोड, अलीगढ़ से मुद्रित एवं प्रकाशित।

कम्प्यूटर ग्राफिक्स– राहुल मिश्रा, अलीगढ़


**यदि समाज को ऊपर उठाना है तो पहले उसे संगठित करें।**

## – अनुक्रमणिका –


| क्रम | पेज नं. |
|---|---|
| 1. मिथिला वन्दना | 2 |
| 2. सम्पादकीय | 3 |
| 3. भगवान परशुराम | 4 |
| 4. हमारा ब्रज में प्रवास | 6 |
| 5. आर्ष साहित्य का संक्षिप्त परिचय | 7 |
| 6. मिथिला से टूटे सम्बन्ध | 8 |
| 7. रत्न द्वारा भाग्य निर्माण | 9 |
| 8. वास्तु शास्त्र और गृह क्लेश निवारण | 11 |
| 9. आर्यावर्त की संस्कृति में श्रृंगार | 13 |
| 10. ममता | 14 |
| 11. शनि का तैतीसा यंत्र..... | 16 |
| 12. सामाजिक असन्तुलन | 18 |
| 13. वेलेन्टाइन डे | 19 |
| 14. कविता | 20 |
| 15. बैगन का चटपटा अचार | 21 |
| 16. श्री कृष्ण ज्ञान गीता | 22 |
| 17. एकादशी पर जरूर पढ़ें–वर..... | 24 |
| 18. आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन | 25 |
| 19. समाचार | 26 |
| 20. समाचार | 27 |
| 21. जन्मदिन एवं शादी ....... | 28 |
| 22. मैथिल ब्रा.स. वार्षिक सदस्य | 29 |
| 23. मैथिल ब्रा.स.पत्रिका वितरण | 30 |
| 24. वर कन्या सूची | 31 |

MAITHIL BRAHMIN YouTube

# वंदना

शारदा शरदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदासमाकमं सन्निधं सन्निधं क्रियात।।
सरस्वती च तां नौमि वागधिष्ठातृदेवतां।
देवत्व प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः।।

# –:मिथिला वंदनाः–

नित्यस्थलि नित्यलीले नित्यसधाम नमोअस्तु ते।
धन्या त्वं मिथिले देवि ज्ञानदे मुक्तिदायिनि।।
राम स्वरूपे वैदेहि सीताजन्मप्रदायिनि।
पापविध्वंसिके मातार्भवन्धविमोचनि।।
यज्ञदानतपोध्यानस्वाध्यायफलदे शुभे।
कामिनां कामदे तुभ्यं नमस्यामों वयं वदा।।

# –:पत्रिका सम्बन्धी नियमः–

- पत्रिका की एक प्रति का शुल्क 10/–रू, वार्षिक शुल्क 120/–, आजीवन शुल्क 2100/– है। 2500/– (एक या दो बार में) देकर पत्रिका के संरक्षक सदस्य बन सकते हैं।
- पत्रिका के विविध स्तम्भों में सहयोग करने के अतिरिक्त सम्पादक मण्डल के सदस्यों को अपने क्षेत्र में पत्रिका के कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है।
- व्यक्तिगत अथवा किसी संगठन सम्बन्धी आलोचनात्मक लेख नहीं छापे जा सकेंगे। केवल रचनात्मक, सकारात्मक एवं समाजोत्थान सम्बन्धी लेख ही छापे जायेंगे।
- जो लेख नहीं छापे जा सकेंगे, उनको लौटाने की जिम्मेदारी सम्पादक मण्डल की नहीं होगी। लेखक की राय सम्पादक मण्डल की राय से मिलना आवश्यक नहीं है।
- पत्रिका के सम्बन्ध में सुझाव एवं समीक्षा सादर आमंत्रित हैं।
- पत्रिका में विज्ञापन के लिये कवर पेज चार कलर में तीन माह के लिए 2 हजार रूपये तथा अन्दर का आधा पेज एक माह के लिए 500/– देय होगा।
- वर–कन्या की सूचियाँ एवं लेख कार्यालय के पते पर स्वीकार किये जायेंगे।
- पत्रिका में प्रकाशित लेख–लेखक के अपने व्यक्तिगत विचार होते हैं। पत्रिका के सम्पादक मण्डल का उन विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- आप अपने लेख (स्वास्थय सम्बन्धी, विवाह सम्बन्धी, सवाल–जबाब, समाज से सम्बन्धित लेख, कहानी इत्यादि) हमें व्हॉटसअप कर सकते हैं।

Whatsapp: 9259647216 (मैथिल ब्राह्मण संदेश ग्रुप)

# संपादकीय

प्राचीन भारत में सुख प्रसिद्ध मिथिला राज्य था, जो वर्तमान में उत्तरी बिहार और नेपाल की तराई का स्थान है। इसे ही मिथिला की संध्या दी जाती थी। इसे बौद्धिक परम्परा में विद्वानों की जनक स्थली माना जाता था, जहां देश–विदेश के विद्वान अध्ययन करने आते थे। इसकी भाषा मैथिली थी, जिसके उल्लेख रामायण, पुराण तथा जैन और बौद्ध धर्म के ग्रन्थों में हुआ है।

गंगाघाटी नगरों के साथ मिथिला का व्यापारिक सम्बन्ध था। श्राबस्ती और काशी के व्यापारी बनारसी शिल्प के बहुत शौकीन थे। जातक ग्रन्थों के अनुसार मिथिला नरेश के दरबारी काशी के शिल्प की धोती पगड़ी और निर्जयी पहनते थे। उत्साही मिथिला के नागरिक जिज्ञासु होते थे। जो अध्ययन के लिए मिथिला से कोशों दूर अध्ययन के लिए तक्षशिला जाते थे। मिथिलापुरी में शिक्षा केन्द्र की अभाव की पूर्ति के लिए शान्तिमय वातावरण में शिक्षा एवं उच्च संस्कृति की अभिवृद्धि हुई। शनै–शनै मिथिला पाण्डित्य का भण्डार बन गई। मिथिला मण्डल में मण्डन मिश्र का नाम विद्वता में प्रशंसनीय है, जिन्होने शंकराचार्य से शास्त्रार्थ किया। जयदेव और मैथिल, कोकिल विद्यापति को मिथिला की विभूति माना जाता है।

कभी यहां तीरभुत की राजधानी थी, इसलिए लोग इसे तीरथमुक्ति भी कहते थे। इस नाम का प्रमुख कारण था कि यह प्रदेश बड़ी गण्डक और बागमती नदियों के तीर (तटों) के बीच स्थित था। आज धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन में मिथिला का विशेष स्थान है। इस नगर का प्रतिनिधित्व आधुनिक जनकपुर करता है, जिसके दर्शनार्थ भारतवासी प्रभुत संख्या में यहां आते हैं।

प्राचीन काल के अनेक मिथिला शासकों के नाम प्राप्त होते हैं। उनमें विदेह (जनक) वंशीय राजाओं के नाम बाल्मीकि रामायण एवं पुराणों में मिलते हैं। इसके पश्चात के शासकों का विवरण ऐतिहासिक श्रोतों में उपलब्ध है। बाल्मीकि रामायण में जनक की वंश परम्परा दी गयी है। रामायण में सीरध्वज जनक पूर्वजों में राजा दशरथ का नाम बताते हैं। बाल्मीकि रामायण के अनुसार रामायण पूर्व निम्न राजाओं का शासन रहा। मिथि–निमि के पुत्र थे, जो मिथिला के संस्थापक थे।

**– डा0 मोरमुकुट शर्मा**

# भगवान परशुराम

– डोरीलाल शर्मा 'श्रोत्रीय' अलीगढ़

भगवान परशुराम के आदि पूर्वज भृगु ऋषि भारद्वाज मुनि के गुरू थे। उन्हें मृत संजीवनी विद्या सिद्ध थी। जनश्रुति है कि जब शिव के द्वारा प्राण दक्ष यज्ञ भंग हुआ, तब भृगु ऋषि ने ही शिव का सामना किया था। विष्णु की छाती पर लात भृगु ने ही मारी थी और इन्द्रासन आरूढ़ राजा नहुष के अहंकार को चूर करने वाले भृगु ऋषि ही थे। ऐसे ऋषि के वंश में भगवान परशुराम का जन्म हुआ। अतः भृगु से लेकर जमदग्नि तक के सभी संस्कार भगवान परशुराम में समन्वित हो गए थे।

महायोद्धा परशुराम का जन्म जमदग्नि की पत्नी रेणुका के गर्भ से बैसाख शुक्ल तृतीया को हुआ था। जन्म के समय पुनर्वसु नामक नक्षत्र, उच्च की छः ग्रह, राहु की मिथुन राशि थी। ये क्रमशः रूमण्वान्, सुषेण, वसु, विश्वासु, राम पांच भाई थे। यज्ञोपवीत संस्कार होने के बाद परशुराम नेशाल ग्राम पर्वत पर जाकर कश्यप ऋषि से वेदाध्ययन किया। अल्प काल में ब्रह्म विद्या के अतिरिक्त मृत्युन्जय विद्या भी प्राप्त की। उनकी आकांक्षा पूर्णतम होने की थी। इसलिये उन्होंने अन्य गुरूओं से भी अन्यान्य विद्याएं व शिक्षा ग्रहण कीं।

माता रेणुका की प्रेरणा से भगवान परशुराम ने बचपन में ही अपने पिता से शास्त्र और शस्त्र की शिक्षा ग्रहण कर गंध मादक पर्वत पर जाकर भगवान शंकर की कठिन तपस्या की। उनकी अनन्य भक्ति से शिव ने प्रसन्न होकर इन्हें अपना अजेय परशु और त्र्यंबक धनुष भी दिया और उन्हें इस पृथ्वी को अतताइयों और असुरों से मुक्त करने की आज्ञा दी। परीक्षा लेने के बहाने गुरू शिवजी ने उनसे कई दिन घोर युद्ध किया। एक दिन शिव के त्रिशूल का बार बचाते हुए बड़ी स्फूर्ति से परशुराम ने शिव द्वारा प्रदत्त परशु से शिव के मस्तक पर प्रहार किया। इस दक्षता को देखकर गुरू ने उन्हें गले लगा लिया। शिवजी के आदेश से परशुराम ने कैलाश क्षेत्र में राक्षसों से युद्ध कर उन्हें परास्त किया। अपने शिष्य परशुराम के तेज और पराक्रम से प्रसन्न होकर भगवान शकंर ने उन्हें परशु देकर कहा। अन्याय और अत्याचारों के पर्वतों को इस परशु से चीरने वाला 'परशुराम' के नाम से युग–युग तक पूज्य रहेगा।

एक दिन रेणुका ने सरोवर में स्नान करते समय गंधर्वों के राजा चित्ररथ को अप्सराओं के साथ जल क्रीडा करते देखा। उन्हें देखकर रेणुका का मन कामातुर हो गया, कामाक्रान्त मानसिक स्थिति में जब वह आश्रम में लौटी तो इसे इस अवस्था में देख जमदग्नि अत्यधिक क्रुद्ध हुए और अपने पांचों पुत्रों से रेणुका का वध करने को कहा। चार पुत्रों ने माता पर प्रहार करना स्वीकार नहीं किया। तब उन्हें पिता ने शाप दिया। पिता की आज्ञा का पालन परशुराम ने किया और माता का सिर काट दिया। पिता ने प्रसन्न होकर वर मांगने को कहा। परशुराम ने माता और भाईयों को पुनः जीवन, अपने लिये युद्ध में अजेयता और दीर्घायु की मांग की। परम तपस्वी जमदग्नि ने उनकी सभी इच्छाऐं पूर्ण कर दी।

जब परशुराम के शौर्य की चर्चा कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन के कानों तक पहुंची तो वह परशुराम की खोज में जमदग्नि के आश्रम में सैन्यबल सहित गया। परन्तु परशुराम वहां नहीं मिले। महर्षि जमदग्नि ने अपने साढू का कामधेनु के प्रसाद से आतिथ्य सत्कार किया। कामधेनु पर सहस्त्रार्जुन का लोलुप मन लालायित हो उठा। उसने रेणुका से कामधेनु मांगी। परन्तु रेणुका ने अस्वीकार कर दिया। सहस्त्रार्जुन क्रोध में सारे आश्रम को नष्ट भ्रष्ट कर कामधेनु को अपने साथ ले गया। जब परशुराम आश्रम में आये

और कार्तवीर्य के नृशंस कृत्यों का पता लगा तो उन्होंने सहस्त्रावाहु अर्जुन के यहां जाकर उस पर आक्रमण कर दिया, उसकी सहस्त्रभुजाएं काट डाली, उसकी असंख्य सेना को मार डाला और उसे मारकर कामधेनु को बछड़े सहित वापिस ले आए। इस समाचार का सारे देश में हर्ष और उत्साह से स्वागत किया गया और पराक्रम परशुराम को इन्द्र आदि देवताओं ने उपहार भेंट किये।

एक दिन कार्तवीर्य के सौ पुत्रों ने आश्रम में जाकर परशुराम की अनुपस्थिति में जमदग्नि की हत्या कर आश्रम में आग लगाकर पिता की मृत्यु का बदला ले लिया। जब परशुराम लौटे तो उन्होने पिता के देह पर इक्कीस चोट के निशान देखे। पिता के शव के पास बैठकर विलाप करने लगे। पिता का दाह संस्कार किया और आततायियों के विनाश का संकल्प लिया।

क्रोधावेश में परशुराम ने कार्तवीर्य के सभी पुत्रों को मौत की गोद में सुला दिया। जिन–जिन क्षत्रिय राजाओं ने उस समय उनका साथ दिया, उन सबको समूल नष्ट कर दिया। जमदग्नि की मृत्यु के समय रेणुका ने इक्कीस बार छाती पीटी थी। उसके फलस्वरूप परशुराम ने इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रियों से शून्य कर दिया। आततताई क्षत्रियों के रक्त से समन्त पंचक (आधुनिक कुरूक्षेत्र) में अपने पितरों का तर्पण किया। महर्षि ऋचीक ने स्वयं प्रकट होकर उन्हें इस घोर कर्म से रोका। उनके कहने पर उस संहार कार्य का बंद कर उन्होंने पितरों की आज्ञा से अश्व–मेघ यज्ञ किया और जीती हुई सम्पूर्ण पृथ्वी कश्यप ऋषि को दान में देकर परशुराम ने नर्मदा पारकर दक्षिण समुद्र तट पर जाकर गोवा के तट पर परशु फेंका, जो कन्या कुमारी पर जाकर गिरा। वहां से समुद्र उतने स्थान से हट गया, वह क्षेत्र परशुराम प्रदेश कहलाया। बाद में परशुराम महेन्द्र पर्वत पर चले गये।

पिता के वर से परशुराम ने दीर्घायु प्राप्त की। उनका नाम सप्त चिरंजीवियों में अंकित है। यथाः

**अश्वत्थामा बलिर्व्यासो, हनुमानश्च विभीषणः।।**
**कृपश्च परशुरामश्च, सप्तैते चिरंजीवनः।।**

वेदविज्ञ, शस्त्र संचालन में पारंगत परशुराम अन्याय और अत्याचार के उच्छेदन के प्रतीक माने जाते हैं। आज के संदर्भ में उनकी पुण्य स्मृति राष्ट्र रक्षा की नई प्रेरणा देती है। परशुराम पौरूष के आधार भी थे।

**विक्रमी रूप नूतन अर्जुन, जेता का,**
**आरहा स्वयं यह परशुराम त्रेता का।**
**है एक हाथ में परशु, एक में कुश है,**
**आ रहा नए भारत का भाग्य पुरूष है।।**

–रामधारी सिंह दिनकर

**www.maithilbrahminmahasabha.in**

**आप मैथिल ब्राह्मण चैनल को अवश्य सब्सक्राइव करें, ताकि मिथिला से ब्रज प्रवास के दौरान मैथिल ब्राह्मणों का वर्णन आपको भी पता चल सके।**

**मैथिल ब्राह्मणों की उक्त वैबसाइट को आप Open कर हितचिन्तक सदस्य के कॉलम को अवश्य देखिये। अगर आप भी हितचिन्तक सदस्य बनना चाहते हैं तो हितचिन्तक सदस्य कॉलम में निर्धारित फार्म भरकर हमें Whatsup करें। आपका मिथिला से ब्रज प्रवास का विवरण हम अपने इतिहासविदों से तैयार करवाकर आपका वंश परिचय (मिथिला से वर्तमान तक) उक्त वैबसाइट में प्रकाशित करायेंगे।**

# हमारा ब्रज में प्रवास

– डा0 मोरमुकुट शर्मा

सृष्टि के आरम्भ से ही ब्राह्मण समस्त वर्णों, जातियों और उपजातियों का मार्गदर्शक रहा है। राजा निमि के शरीर का मंथन और मंथन से विदेश राजा जनक का जन्म तदनन्तर उन्होंने मिथिला नगरी बसाई। निमि के यज्ञ में जितने ब्राह्मण आए थे, उनको अपने देश में ग्राम–दान देकर बसाया गया, उन्हें मैथिल ब्राह्मण कहा गया।

कालान्तर में मिथिला षड्दर्शन की जननी, प्रकांड पंडितों की जन्मभूमि और विद्या–वारिधि का केन्द्र बनी। मिथिला में विद्वानों ने शास्त्रार्थ में अनेक विद्वानों को पराजित कर विश्व में अपना परचम लहराया गया। जब मिथिला के पंड़ित काशी में आये तो काशी की पाण्डित्य–परम्परा भी विख्यात् हो गई।

गयासुद्दीन तुगलक ने मिथिला के ब्राह्मणों पर अत्याचार किया। उनके कर्मकाण्ड, यज्ञोपवीत पर रोक लगा दी तथा मांस खाने के लिए विवश किया। सन् 1325 में मिथिला से नो गोत्र के 75 परिवार तीर्थ यात्रा के नाम पर ब्रज क्षेत्र में आये। मिथिला से आये ब्राह्मण तीर्थाटन करते हुए तीन वर्ष बाद सन् 1328 ई. में मथुरा पहुँचे और उन्होंने संकल्प कर लिया कि मिथिला वापस नहीं जाना है, बल्कि यहीं रहना हैं। मिथिलावासी मैथिल ब्राह्मण ब्रज में प्रवास करने के कारण ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण कहलाये।

मुगलकालीन इतिहास ग्रंथों के आलोक में अकबर के समय में मिथिला से मैथिल विद्वान सामूहिक रुप से ब्रज में आये। सन् 1556 ई. में जब अकबर दिल्ली के सिंहासन पर बैठा, उस समय मिथिला के विद्वान महेश ठक्कुर ने अकबर की प्रशंसा की, जिससे अकबर ने उन्हे 58 परगना का राज्य एवं वस्त्राभूषण दान में दे दिये। अकबर मिथिला के अनेक विद्वानों को अपने साथ भी लाये। राजा टोडरमल बिहार से लौटते समय सम्राट के आदेशानुसार 71 परिवार आगरा लाये थे, जिनके वंशज आगरा, मथुरा, अलीगढ़ आदि जनपदों में है। बादशाह अकबर को हिन्दू रीति–रिवाज, सस्कृति, साहित्य से विशेष प्रेम था। बादशाह ने मिथिला के विद्वानों से ही रामायण, गीता, श्रीमदभागवत आदि ग्रंथों का फारसी में अनुवाद कराया। 'आइने अकबर' की राजकीय सूची में मिथिला के विद्वानों में मधुसूदन मिश्र, रामचन्द्र उपाध्याय, बलभद्र मिश्र तथा वासुदेव मिश्र का नाम चित्रित है।


**www.maithilbrahminmahasabha.in**

आप मैथिल ब्राह्मण चैनल को अवश्य सब्सक्राइव करें, ताकि मिथिला से ब्रज प्रवास के दौरान मैथिल ब्राह्मणों का वर्णन आपको भी पता चल सके।

मैथिल ब्राह्मणों की उक्त वैबसाइट को आप Open कर हितचिन्तक सदस्य के कॉलम को अवश्य देखिये। अगर आप भी हितचिन्तक सदस्य बनना चाहते हैं तो हितचिन्तक सदस्य कॉलम में निर्धारित फार्म भरकर हमें **Whatsup** करें। आपका मिथिला से ब्रज प्रवास का विवरण हम अपने इतिहासविदों से तैयार करवाकर आपका वंश परिचय (मिथिला से वर्तमान तक) उक्त वैबसाइट में प्रकाशित करायेंगे।

# आर्ष साहित्य का संक्षिप्त परिचय

– राजेन्द्र पाल शास्त्री, आगरा

**आगम**– तन्त्र शास्त्र (अथर्ववेद का उपवेद) – अनादि परम्परा– आगम (उपासना)

**निगम**– उपवेद उपांग से आगम (तन्त्र) निकालने के बाद क्या वेद तथा वेद मूलक अन्य साहित्य निगम हैं। निबन्ध ग्रंथ तक की परम्परा है निगम, जिसमें कि–

1. **वेद** (क)– संहिता– वेद मंत्रों का संकलन (ब्रह्मचर्य आश्रम)
(ख)– ब्राह्मण (ग्रहस्थाश्रम) (ग) आरण्यक (वानप्रस्थ आश्रम) (घ)– उपनिषद (सन्यास)

| षट् सूत्र | षट वेदांग | षड दर्शनम् (वेद उपअंग) | स्मृति |
|---|---|---|---|
| श्रोत सूत्र | शिक्षा शास्त्र | वैशेषिक | मनुस्मृति |
| ग्रह्य सूत्र | कल्प शास्त्र | सांख्य | पाराशरस्मृति |
| धर्म सूत्र | व्याकरण शास्त्र | योग | याज्ञवल्क्य |
| शुल्ल सूत्र | निरूक्त शास्त्र | न्याय | स्मृति |
| प्रतिशाख्य | छन्द शास्त्र | मीमांसा | देवत |
| अनुक्रमानि | ज्योतिष शास्त्र | वेदान्त | नारद |

**पुराण**–18, **इतिहास**– रामायण, महाभारत,

**उपवेद**– (1) अर्थवेद या अर्थशास्त्र (2) धनुर्वेद, (3) गार्न्धवेद (4) आयुर्वेद

## जो तू मैथिल एक मत हो जायेगा

संस्कृति सबकी एक चिरन्तन खून रंगों में मैथिल है।
विराट सागर समाज मैथिल हम सब इसके बिन्दु हैं।।

जब कभी मैथिल हुआ है एक मत।
आ गया दुनियां का शासन एक छत।।

आज भी फिर वो समय आ जायेगा जो।
तू यादकर गार्गी परशु के त्याग को।।

उनके सीने में धधकती आग को।।
तब तो तू ब्रह्मनन्द बन जायेगा।

जन्मभूमि तो क्या सभी पा जायेगा।
जो तू मैथिल एक मत हो जायेगा।।

राम के अनुरूप तू जीवन बना।
कृष्ण के अनुरूप तू नीति बना।।

फिर तो तू इस विश्व पर छा जायेगा।
जो तू मैथिल एक मत हो जायेगा।।

**राजेन्द्र पाल शास्त्री**

ऋषि गोत्र– भारद्वाज
मूलग्राम– सिरसिवे बधवास
खेड़ा– अकोसीया
प्रवर– त्रिप्रवर
वेद– सामवेद
मो: 9760746099

शास्त्री जी का पूर्ण वंश विवरण मय फोटो देखने हेतु मैथिल ब्राह्मणों की वेबसाइट **www.maithilbrahminmahasabha.in** पर क्लिक करें।
आप भी अपना वंश विवरण उपरोक्त वेबसाइट में अपलोड करा सकते हैं, जिसके आप उक्त वेबसाइट के कॉलम हितचिन्तक सदस्य अवश्य देखें।

# मिथिला से टूटे सम्बन्ध 18वीं शताब्दी से जुड़े

**लेखक– डोरीलाल शर्मा श्रोत्रिय,** अलीगढ़

औरंगजेब के अत्याचार एवं असहिष्णुता की नीति के कारण व्रज प्रवासी मैथिल ब्राह्मणों का एवं मिथिलावासी मैथिल ब्राह्मणों का आवागमन बंद हो गया था। यह क्रम सन् 1658 ई0 से 1857 की क्रान्ति तक चला। 1857 की क्रान्ति के बाद भारत में नव जागरण का सूत्रपात हुआ। भारत के समाज सुधारकों ने 1857 की क्रान्ति के बाद स्वतन्त्र भारत का स्वप्न देखा था। मैथिल ब्राह्मण समाज में भी इस समय नई चेतना आई। ऐसे समय में स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती ने जाति उत्थान हेतु बिगुल बजाया था। उन्होंने भारत देश के प्रत्येक भाग में घूमकर जाति उद्धार तन मन से कार्य किया। प्रवासी मैथिल ब्राह्मणों के सम्बन्ध, जो औरंगजेब के शासन काल से समाप्त हो गए थे, उन्हें पुनः चालू किया। उनके प्रयत्न से अलीगढ़ के मैथिल ब्राह्मणों का मिथिला जाना तथा मैथिल ब्राह्मणों का अलीगढ आना पुनः शुरू हुआ। स्वामी जी कुछ दिन ग्रहस्थ आश्रम में रहने के बाद सन्यासी हो गए। सन्यासी के रुप में देश में घूमते हुए जातीय उत्थान का कार्य करते रहे। मिथिला से वापिस आकर स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती ने अलीगढ में मैथिल सिद्धान्त सभा की स्थापना की। मैथिल सिद्धान्त सभा की स्थापना के बाद सन् 1882 से स्वामी जी जाति सेवा में लग गए। सिद्धान्त सभा के कार्यकताओं तथा मिथिलावासी रुन्ना झा के बीच 1882 एवं 1886 के बीच पत्र व्यवहार आरम्भ हुआ। सिद्धान्त सभा कार्यकर्ताओं द्वारा दरभंगा के पंजीकरों को बुलाया गया। अलीगढ निवासियों को अपने वीजी, मूलग्राम गोत्र की जानकारी थी, उन्होंने पंजीकारों द्वारा उतीड़ें चङवाई।

मिथिला के पंजीकारों के प्रतिवर्ष अलीगढ़ आने से मिथिलावासियों के साथ यहाँ के प्रवासी मैथिल ब्राह्मणों के सम्बन्ध घनिष्ट हुए। दरभंगा के पंजीकार पं0 बवुए मिश्र एवं पं0 जगदीश झा पंजीकार अलीगढ आए उन्होंने उतीड़ें चढ़ाई। पं जगदीश झा का पत्र व्यवहार भी काफी लम्बे समय तक जारी रहा और समय–समय पर अलीगढ आते भी रहे। स्वामी जी की प्रेरणा से अलीगढ़ में मैथिल ब्राह्मण पाठशाला स्थापित की गई। स्वामी जी ने मिथिला के योग्य अध्यापकों को नियुक्त किया। इनमें केहरा निवासी पं. गेंदालाल झा, पं. क्षमानाथ मिश्र तथा पं. खेदन मिश्र प्रमुख थे। उन्नीसवीं शताब्दी में मिथिला के पंजीकारों और विद्वानों के अतिरिक्त महाराजा दरभंगा भी कई बार अलीगढ आए थे। इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी में विच्छन हुए सम्बन्ध उन्नीसवीं शताब्दी में पुनः स्थापित हो गए। ब्रजवासियों का मिथिला जाना एवं मिथिला जाना एवं मिथिला वासियों का ब्रज में आना आरम्भ हुआ।

इसके बाद मिथिला के अनेक पंजीकार एवं विद्वान ब्रज क्षेत्र में आते रहे। इनके आने से ब्रज प्रवासी मैथिलों के सम्बन्ध मिथिलावासियों से घनिष्ठ हो गए तथा यहाँ के अनेकों व्यक्ति मिथिला गए। सन 1910 में मधुवनी की विराट सभा में ब्रज क्षेत्र से पं. चुन्नीलाल झा, पं. रामचन्द्र ठक्कुर एवं बुधसागर झा शामिल हुए। मिथिला के राजनीतिज्ञों में प्रधान श्री गंगा नंद सिंह ने सन् 1933 में अलीगढ आकर मैथिल ब्राह्मण संस्कृत पाठशाला के वार्षिक अधिवेशन का सभापतित्व किया था 1944 ई0 में मैथिली के प्रसिद्ध लेखक पं0 शशि नाथ चौधरी ने इस पाठशाला के वार्षिक उत्सव का सभापति का पद संभाला था। श्री ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण महासम्मेलन आगरा एवं अजमेर में महाराजा दरभंगा श्री कामेश्वर सिंह सभापति रहे। इनके साथ राज पंडित बल्देव मिश्र, अखिल भारतीय मैथिल महासभा के महामंत्री राय बहादुर शिवशंकर झा एडवोकेट एवं उद्भट विद्वान पं0. सीताराम झा पधारे थे। यहाँ से भी पं. हरिगोविन्द मिश्र, पं. फूलचन्द्र मिश्र, महाराजा से मिले थे। इनके अतिरिक्त ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण महा सम्मलेन के प्रधान पं. कान्ती प्रसाद मिश्र, पं. ब्रजमोहन झा मिथिला का भ्रमण किया था। पं. चुन्नीलाल झा की मैथिल अनवेषण पुस्तक के आधार पर अलीगढ के अनेक व्यक्तियों का मिथिला वासियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित हुआ था इस प्रकार मिथिला वासियों एवं ब्रज वासियों का आवागमन प्रारम्भ हुआ तथा पारम्परिक सम्बन्धों की स्थापना हुई।

# रत्न धारण द्वारा भाग्य निर्माण

– **आचार्य पूरन चन्द्र शास्त्री,** अलीगढ़

**मूंगा–** मूंगा धारण करने से मंगल ग्रह जनित समस्त दोष शांत होते हैं। रक्त (खून) साफ करता है व उसमें वृद्धि करता है। खून से सम्बधित रोग ठीक हो जाते हैं। हृदय रोग में लाभ पहुँचाता है। हाई ब्लड प्रैशर (उच्च रक्तचाप) के लिए भूत–प्रेतादि से बचाव के लिए धारण करते हैं। प्रायः इसलिए छोटे बच्चों के गले में मूंगे के दान डाल दिए जाते हैं।

**हीरा–** इसे धारण करने से शुक्र ग्रह जनित समस्त दोष शांत होते हैं। धन–धान्य की वृद्धि व अटूट लक्ष्मी बनी रहती है। वीर्य दोष को दूर करता है। वंश को बढ़ाता है। इसे पहनने से जादू–टोना नहीं लगता। बुद्धि, सम्मान, बल व शरीर की पुष्टता सदैव बनी रहती है।

**पन्ना–** इसे पहनने से बुध ग्रह जनित समस्त दोष शांत होते हैं। धारक की चंचल चित्त वृतियाँ शांत व संयमित रहती हैं तथा धारक को मानसिक शांति प्राप्त होती है। इसे धारण करने से मन एकाग्र होता है। यह काम–क्रोध आदि विकारों को शांत कर धारक को असीम सुख व शांति प्रदान करता है बुद्धि तथा स्मरण शक्ति की वृद्धि के लिए विद्धार्थी यदि पन्ना पहनें तो बुद्धि तीक्ष्ण होती है। सरस्वती माता की कृपा रहती है। भाग्य को बढ़ाता है।

**मोती–** इसे धारण करने से चन्द्र ग्रह जनित दोष शांत होत हैं। इसकी तासीर ठंडी होने के कारण यह क्रोध शांत करता है तथा मानसिक तनाव भी दूर करता है। बुखार में लाभ पहुँचाता है। शरीर में गर्मी ज्यादा हो तो मोती पहनना उत्तम होता है।

**माणिक–** इसे धारण करने से सूर्य ग्रह के सभी दुष्प्रभाव नष्ट हो जाते हैं। भय व्याधि तथा दुख क्लेश आदि सभी कष्ट दूर होते हैं। धारक को सुख सम्पत्ति, धन–धान्य व रत्न आदि की प्राप्ति होती है। स्त्रियों के गर्भपात होन से रोकता है। वंश की वृद्धि करता है।

**पुखराज–** इसे धारण करने से बृहस्पति (गुरू) ग्रह जनित दोष शांत होते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा व व्यापार व्यवसाय आदि में वृद्धि करता है। अध्ययन व पढ़ाई लिखाई के क्षेत्र में भी यह उन्नति का कारक माना गया है। यह कुष्ठ व चर्मरोग नाशक माना गया हैं स्त्रियों को पति, संतान व गृहस्थ सुख के लिए इससे बढ़कर कोई रत्न नहीं है। वैवाहिक सम्बन्धों में दृढ़ता प्रदान करता है। यदि किसी कन्या की शादी में अनावश्यक विलम्ब हो रहा है तो पुखराज का इस्तेमाल करना चाहिये।

**नीलम–** शनि ग्रह के समस्त दुष्प्रभाव को समाप्त कर धारक की सभी विपरीत परिस्थितियां को उसके अनुकूल बनाता है। शनि की साढ़े साती के दुष्प्रभाव को करने में अति लाभदायक है। आयु को बढ़ाने वाला है। बल, बुद्धि व वंश की वृद्धि करता है। मुख की कांति को बढ़ाता है। सुख सन्तोष देने वाला व बील वीर्य व नेत्र ज्योति को बढ़ाता है। धन, धान्य, यश, मान सम्मान को बढ़ाने में सहायक है।

**गोमेद–** इसे धारण करने से राहु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव शांत होते हैं। नकसीर, ज्वर, वायुगोला, प्लीहा तथा समस्त प्रकार के उदर (पेट) रोगों में इसे लाभदायक माना गया है। शत्रुओं का भय नहीं रहता तथा उन पर विजय प्राप्त होती है। इसी गुण के कारण कोर्ट कचहरी तथा मामले मुकदमें आदि के विषय में लाभदायक माना गया है। जिन बच्चों का पढ़ाई में मन न लगता हो, उन्हें गोमेद धारण करना चाहिये।

**लहसुनिया–** इसे केतु ग्रह की शान्ति के लिए धारण करते हैं। दुःख दरिद्रता व्याधि भूत बाधा आदि के बचाव के लिए उपयुक्त है। युद्ध के क्षणों में यह रत्न प्रबल शत्रु संहारक माना जाता है।

## रोगानुसार रत्न धारण

मानसिक अस्वस्थता के लिए – पन्ना + पुखराज + मून स्टोन
बुद्धि व स्मरण शक्ति की वृद्धि के लिए – पन्ना या तुरमली या गोमेद
क्रोध शांति के लिए – (पन्ना + मोती) या स्फटिक माला या मोती की माला
भूत प्रेतादि से बचाव – मूंगा या लहसुनिया
कैंसर – मूंगा + नीलम
दुर्घटना से रक्षा – मूंगा + मोती
शत्रु पर विजय – मूंगा + गोमेद
वीर्य दोष – हीरा या सफेद पुखराज
वंश में वृद्धि – नीलम या माणिक या हीरा
पेट की बीमारी या गैस्टिक – लहसुनिया या गोमेद
नपुंसकता – मूंगा + पीला पुखराज सोने में
एलर्जी – लहसुनिया या गोमेद
आत्मविश्वास में कमी – मूंगा या पन्ना या कारलेनियन
फुलवैहरी – सफेद मूंगा + लाजवर्त
शुगर – सफेद मूंगा + सफेद पुखराज
ब्लड प्रैशर – मैग्नेटिक या गनमैटल या ब्लड स्टोन
हार्ट अटैक – कहरवा य यशव व रूद्राक्ष
दिल की धड़कन – संग येशव की नादली
जिन बच्चों का पढ़ाई में मन न लगता हो – पन्ना या गोमेद या तुरमली

**रत्नों को राशि अनुसार पहनने की विधि हेतु निम्नानुसार देख सकते हैं अथवा आचार्य पूरन चन्द्र शास्त्री (इस लेख के लेखक) से मोः 9412442343 से सम्पर्क करें**

| नाम का अक्षर | राशि | स्वामी | रत्न | उपरत्न |
|---|---|---|---|---|
| चू चे चो लि ला लौ आ ले लू | मेष | मंगल | मूंगा | लाल (यमनी) हकीक, लाल ओनेक्स, तामड़ा, लाल गोमेद |
| उ इ ए ओ ब वि बु बै बी | वृषभ | शुक्र | हीरा | सफेद हकीक, ओपल, स्फटिक सफेद पुखराज जरकन |
| क कि कू के को घ ड. छ ह हा | मिथुन | बुध | पन्ना | हीरा हकीक, ओनेक्स मरगज फिरोजा |
| हि हू हे हो डा डि डू डे डां | कर्क | चन्द्र | मोती | दूधिया हकीक सफेद मूंगस, चन्द्रकान्त मणि, सफेद पुख. |
| म मी मू मे मो ट टी टू टू | सिंह | सूर्य | माणिक | स्टार माणिक, रतवा हकीक, तामड़ा, लाल तुरमली |
| टो पा पी पू पे पो ष ण ठ | कन्या | बुध | पन्ना | हीरा हकीक, ओनेक्स, मरगज, फिरोजा, जबरजद |
| रा र रु रे रो ता ति तू ते | तुला | शुक्र | हीरा | सफेद हकीक, ओपल, स्फटिक, सफेद पुख., सफेद मूंगा |
| तो न नी नू ने नो या य यू | वृश्चिक | मंगल | मूंगा | लाल हकीक, लाल ओनेक्स, तामड़ा, लाल तुलमली |
| ये यो भ भी भू भे धा फा ढा | धनु | गुरु | पुखराज | पीला हकीक, सुनहला, पीला गोमेद, बैरूज |
| भो जा जी जे खा खो खू गू ग गे | मकर | शनि | नीलम | कटैला, काला स्टार, लाजवर्त |
| गो श सि सू से सो द दा | कुम्भ | शनि | नीलम | कटैला, काला हकीक, काला स्टार, लाजवर्त, गोमेद |
| दि दु थ झ दे दो त्र च चा ची | मीन | गुरु | पुखराज | पीला हकीक, सुनहला, लहसुनिया |

SUBSCRIBE

MAITHIL BRAHMIN YouTube

उपरोक्त चैनल में आप देखेंगे कि मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यवस्था, पाण्डित्य परम्परा, मैथिल ब्राह्मणों का राजपण्डित के रूप में नियुक्ति तथा ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर जो आपको आज तक नहीं पता है।

# वास्तु शास्त्र और गृह क्लेश निवारण

संकलक – प्रेमशंकर शर्मा, बुलन्दशहर

**प्रायः सभी घरों में किसी ना किसी बात को लेकर छोटा–मोटा विवाद बना ही रहता है। कभी बच्चों की बात को लेकर तो कभी बड़े–बूढ़ों की बात को लेकर घर में अशांति का वातावरण बना रहता है, जिससे सभी परेशान रहते हैं। चाहते सभी यह हैं कि घर में सुख–शांति बनी रहे, फिर भी सभी लड़ते–झगड़ते रहते हैं। हम अपने समस्त प्रयासों के बाद भी यदि गृहक्लेश से मुक्त नहीं हो पाते तो संभव है कि हमारे घर में वास्तुदोष है। जी हां, घर में कलहपूर्ण वातावरण, अशांति का मुख्य कारण आपके घर में वास्तुदोष का होना भी हो सकता है। प्रायः देखने में आता है कि लोग भवन निर्माण जल्दी करने की होड़ में वास्तु के नियमों का पालन नहीं करते। फलस्वरूप जीवन भर दुःखी और मानसिक तनाव में रहते हैं। कभी–कभी यह दोष इतने भारी होते हैं कि यह भवन के निवासियों को जीवन भर तंग करते हैं। हमें चाहिये कि भवन का निर्माण करवाते समय वास्तुशास्त्र के नियमों का उल्लंघन ना करें और जिन भवनों में पहले से ही वास्तुदोष हो, उनका निवारण करने का प्रयास करें। किस प्रकार के वास्तुदोष होने पर गृहक्लेश होते हैं और उनका किस प्रकार निराकरण किया जा सकता है आईये जाने..........!!**

आगे कुछ ऐसे वास्तु दोषों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके होने से घर में सुख–शांति का अभाव रहता है। सब कुछ होते हुए भी ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ नहीं है , और यह सत्य भी है कि सभी कुछ होते हुए भी यदि घर में सुख–शांति ना हो, हर समय मतभेद व विवाद रहे, गृहक्लेश रहे तो फिर जीवन में रह ही क्या जाता है। आशा है, पाठक इन तथ्यों पर ध्यान देंगे, और उनके निराकरण हेतु उचित उपाय भी करेंगे–

(1) भवन के मुख्य द्वार के दोनों ओर के दरवाजे तथा खिड़कियां नहीं होने चाहिये। (2) दरवाजे और खिड़कियों के ऊपर तथा खिड़कियों के चारों ओर का प्लास्टर टूटा नहीं होना चाहिये, नहीं तो घर में महिलाओं को अधिक हानि की आशंका रहती है। (3) घर की पैराफिट दीवार टूटी नहीं होनी चाहिये। इससे झूठे मुकदमें तथा सरकार से परेशानी होने की सम्भावना रहती है। (4) घर का मुख्य दरवाजा छोटा हो तथा पीछे का दरवाजा बड़ा हो तो वहां के निवासियों को आर्थिक संकट बना रह सकता है। (5) घर के टूटे हुए दरवाजे नहीं होने चाहिये, अगर हैं तो इससे घर के मुखिया की आय में कमी तथा बेमतलब (अनचाहे) कार्यों पर व्यय की संभावना बढ़ जाती है और समाज में भी मान–सम्मान प्राप्त नहीं होता है। (6) घर के मुख्य आंगन का फर्श टूटा हुआ नहीं होना चाहिए तथा यहां पर घर का कूड़ा–कबाड़ा नहीं रखें। ऐसा होने पर घर के मुखिया को मानसिक तनाव तथा घर के अन्य लोगों में तनाव की संभावना बढ़ जाती है। (7) रसोईघर तथा शयनकक्ष की दीवार पर सही तरह से प्लास्टर न होने पर (कहीं पर ईंट नजर आ रही है और टेढ़ा–मेढ़ा प्लास्टर है) आपस में प्रेम तथा मिलन की संभावना कम होने की आशंका रहती है। (8) घर के मुख्य दरवाजों को काले रंग से पेन्ट मत कीजिये, ऐसा करने पर घर के मुखिया का बातों में ठगे जाने, गालियां और बदनामी का सामना करना पड़ सकता है। (9) यदि घर के अन्य दरवाजे भी काले रंग के हैं तो पति–पत्नी में झगड़े , गाली

गलौच, पत्नी से पति की हत्या का भय रहता है। (10) घर के दरवाजों पर अगर, तलवार, चाकू, तीर तथा अन्य का हथियारों को लगाया गया है तो इससे घर के निवासियों को अधिक गुस्सा आने का, अक्कड़ तथा मतलबी होने का भय बना रहता है। (11) घर में पुरानी खिड़कियां, दरवाजे, ग्रिल, इस्तेमाल नहीं करने चाहिये, इससे घर के मुखिया की आय में कमी होनी आरंभ हो जाती है और अगर आय कहीं से होती है तो बेकार के कार्यों में व्यय हो जाती है तथा डर और भय निरन्तर बना रहता है। (12) यदि घर के दांये और बायें तरफ की खिड़कियां टूटी हुई है तो इनसे घर के मुखिया की माता और पिता को कठिनाईयों का तथा बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है, इसके अतिरिक्त बिना बात के लड़ाई झगड़े , रूकावटें और बच्चों की पढ़ाई में रूकावटों का उनके सामना करना पड़ सकता है। (13) यदि घर की खिड़कियां सुबह के समय बंद रखते हैं तो घर के मुखियां के बच्चों को मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। (14) घर के सामने वाले आंगन (कोट यार्ड) में ही फूलों वाले पौधे लगाये, पीछे वाले में नहीं। यदि पीछे वाले आंगन में फूलों के पौधे लगे हैं तो इससे व्यक्ति की मानसिक कमजोरी तथा समाज में भी नीच तया मतलबी लोगों से सम्बन्धों का होना दर्शाता है। (15) घर के सभी दरवाजों पर उतना ही ध्यान दें, जितना मुख्य द्वार पर, अगर मुख्य द्वार ही सुन्दर है और बाकी साधारण है तो यह इसका प्रतीक है कि मुखिया तथा अन्य परिवार के सदस्य शीघ्र और अचानक खुशियों को चाहते है और उनको इसके दीर्घकालीन के बारे में कोई अनुभव नहीं है। (16) प्रायः देखा गया है कि जब घर में घुसते हैं तो सामने एक छोटी–सी दीवार होती है, जिसको पार करके व्यक्ति दायें या बायें किसी कमरे में जाता है, ऐसे मकान के स्वामी लालची, क्रूर और घमण्डी होते हैं। (17) रसोईघर तथा अतिथिगृह परस्पर जुड़े हुए नहीं होने चाहिये, यदि ऐसा है तो संभव है पति–पत्नी में आपसी समझबूझ का अभाव रहता है। (18) यदि घर के सामने पत्थर की पट्टियां बिछी है तो यह आपस के तालमेल में कमी दर्शाता है। (19) यदि दक्षिण–पश्चिम दिशा में अधिक खिड़कियां हो तो उन्हें बंद करके संख्या कम कर दें। (20) पूजा के कमरे में शिव, सूर्य, विष्णु, ब्रह्म, इन्द्र की मूर्ति पूर्व अथवा पश्चिम दिशा में रखें। गणेश, कुबेर, दुर्गा का मुख दक्षिण में तथा हनुमानजी, कार्तिकेय आदि की मूर्ति का मुख दक्षिण–पश्चिम में रखें। (21) पूजा स्थल ईशान कोण में रखे अथवा ईशान एवं उत्तर के मध्य में अथवा ईशान एवं पूर्व मध्यम में रखें। (22) ज्ञान प्राप्ति के लिये पूजा गृह में उत्तर दिशा में बैठकर उत्तर की ओर मुख करके पूरा करें और धन प्राप्ति के लिये पूर्व में बैठकर पूर्व दिशा में मुख करके बैठें। (23) कांटेदार वृक्ष एवं ऐसे वृक्ष जिनसे दूध निकलता हो, घर में नहीं लगायें, इनकी अपेक्षा सुगंधित व खूबसूरत फूलों के पौधे लगायें। (24) शयनकक्ष में वाशबेसिन नहीं होना चाहिए अगर ऐसा है तो पति–पत्नी हमेशा एक–दूसरे को शक की नजर से देखेंगे। हां , शयन कक्ष में अटैच बाथरूम हो और उसमें वाशबेसिन हो तो कोई हर्ज नहीं। (25) कभी भी मेहमान को अपने शयन कक्ष में बातचीत तथा बैठक के लिये मत लेकर जायें, ऐसा करने से पति–पत्नी में झगड़े और शक की शुरुआत हो सकती है। (26) यदि आपके पलंग / चारपाई का सिराहना उत्तर–पश्चिम दिशा में है तो इसे पूर्व दक्षिण दिशा में कर लें, इससे आपको बड़े सुख की नींद और भोग का आनन्द प्राप्त होगा। (27) दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार वाले मकान में स्त्रियां दुःखी और पुरुष भी कोई खास सुख नहीं पाते, आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है और आप उसका मुख्य द्वार दूसरी दिशा में नहीं कर सकते तो आप क्या करें ? अपने मकान के मुख्य द्वार की दहलीज के नीचे चांदी का पतरी दहलीज की लम्बाई के बराबर लगा दें और अपने ड्राइंगरूम में या मुख्य द्वार के सामने कच्ची मिट्टी का बंदर या सफेद रंग का बंदर (बंदर कद के बराबर) रखें तो आपको निश्चय ही लाभ होना शुरू हो जायेगा।

यदि आप भी गृहक्लेश को लेकर चिंतित हैं तो उपरोक्त उपायों को अपनाकर देखें, संभव है आपको आये दिन की इस समस्या से मुक्ति मिल जाये। **–विश्व तंत्र ज्योतिष, अक्टूबर 2016 से साभार**

# आर्यावर्त की संस्कृति में श्रृंगार

– श्रीमती करीना शर्मा
एम.ए., बी.एड., स्वर्ण जयन्ती नगर, अलीगढ़

विवाह के अवसर पर सीता को जब आभूषण पहनाये गये तो सीता ने मिस्सी, मेंहदी काजल, बिंदी, नथ, टीका, बंदिनी, पत्ती, कर्णफूल, हंसली मोहनलता, नौलखाहार, कड़े, छल्ले, पायल, अँगूठी, आदि पहनाने का माँ से कारण पूछा। माताजी इतना श्रृंगार क्यों ?

बेटी आयावर्त की सस्कृति में नारी का सोलह श्रृंगार करना आवश्यक माना जाता है। 'मिस्सी' धारण करने का अर्थ होता है कि आज से बहाना बनाना छोड़ना होगा। 'मेंहदी का अर्थ होता है कि जग में अपनी लाली बनाकर रखना। 'काजल' लगाने का अर्थ होता है, आज से तुम्हें शरारत को तिलांजलि देनी होगी और सूर्य की तरह प्रकाशमान रहना होगा। 'नथ' का अर्थ है कि मन की नथ अर्थात् आज से किसी की बुराई नहीं करोगी। 'टीका' यश का प्रतीक होता है। तुम्हें ऐसा कोई कर्म नहीं करना है, जिससे पिता या पति का घर कलंकित हो, क्योकि आज दो परिवारों की प्रतिष्ठा का दायित्व निर्वाह करना है। 'बंदनी का अर्थ है कि पति, सास–ससुर आदि की सेवा करनी होगी और उनकी आज्ञा का पालन धर्म समझ कर करना। 'पत्ती' का अर्थ है अपनी पति की लाज बनाये रखना, क्योंकि लज्जा ही स्त्री का सबसे बड़ा आभूषण होता है। 'कर्णफूल' का अर्थ होता है कि दूसरों की प्रशंसा सुनकर प्रसन्न रहना, उनसे ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य नहीं करना। 'हंसली' का अर्थ होता है कि सर्वदा हँसमुख रहना। जीवन में सुख का या दुःख का आगमन हो अपना धैर्य बनाये रखना और मुस्कराते हुए जीवन जीना। 'मोहनलता' का अर्थ है कि सबका मन मोह लेने वाले कर्म प्रसन्नतापूर्ण करती रहना। 'नौलखाहार' का अर्थ है कि पति से हार स्वीकार करने मे आनंद का अनुभव करना। कभी भी पति को पराजित करने की चेष्टा मत करना। 'कड़े' का अर्थ है। कि कठोर वाणी का परित्याग कर मधुरवाणी में बोलना। 'बाँक' का अर्थ होता है सीधा–सरल जीवन व्यतीत करना। कभी भी छल–कपट–असत्य का व्यवहार मत करना। 'छल्लें' का अर्थ होता है कि किसी के साथ भी छल नही करना। 'पायल' का अर्थ है वृद्धजनों के पैर दबाना, उन्हें सम्मान देने के लिए उनके चरणों को स्पर्श करना, इससे जो आशीष मिलता है, वह स्वर्ग के समान होता है। अंगूठी' का अर्थ है, जो छोटे हैं उन्हें हमेंशा अपना आर्शीवाद देते रहना।

इस प्रकार विवाह के पश्चात नारी पति की परछाई बन जाती है। उसके सुख दुःख में साथ रहती है। नारी का श्रृंगार और पति की अर्ध परछाई से ही नारी को पूर्णता प्राप्त होती है। यही कारण है कि विवाह के पश्चात कोई भी नारी अपने पति का नाम मुख से नही लेती। क्योंकि नारी पुरुषों की अर्धांगिनी है तो पति का नाम लेना स्वंय का ही नाम लेना होता है।

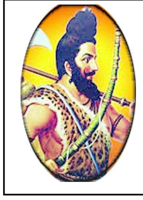
SUBSCRIBE
MAITHIL BRAHMIN YouTube
www.maithilbrahminmahasabha.in
–हितचिन्तक सदस्य बनें–
हितचिन्तक सदस्य कॉलम पर क्लिक करें

# ममता

– श्रीमती मधुवती शर्मा
पला साहिबाबाद, अलीगढ

उस दिन भीर्षण गर्मी पड़ रही थी। चिल–चिलाती धूप और झुलसा देने वाली हवा से बचने के लिए लोग अपने–अपने क्वाटरों में छिपे हुए थे। ऐसी गर्मी में भी मजबूरीवश कुछ लोग अपनी ड्यूटी पर आ–जा रहे थे। मैं भी अपनी प्रथम पाली की ड्यूटी समाप्त करके अपने आवास पर लौट रहा था। रास्ते में प्यास के कारण गला सूखने लगा तो मुझे अपने एक मित्र की याद आयी, जिनका क्वाटर वहीं पास में था। प्यास बुझाने तथा कुछ आराम करने के प्रयोजन से मैंने उनके 'वन' जैसे आवास क्षेत्र में प्रवेश किया तो अचानक मेरी नजर एक बड़ी सी विषखपरी पर पड़ी, जो लापरवाही से अपने हाथ–पांव पसारे दीन–दुनिया से बेखबर आंखे मूदे एक अधसूखे–से पेड़ के नीचे आराम कर रही थी।

मेरे पैर स्वतः ही ठिठक गए। कुछ ही पलों में न जाने कैसे उसे मेरी मौजूदगी का एहसास हो गया। एकदम सचेत होकर उसने मुझे देखा, जीभ लपलपाई, पीछे मुड़ी, फिर कूल्हों को दाँये–बाँये लहराते हुए धीरे–धीरे पेड़ पर चढ़ने लगी। तभी–किट–किट–किट–किट की आवाज से मेरा ध्यान भंग हुआ। मैंने चौंककर पेड़ पर ऊपर देखा। वह एक गिलहरी थी, जो विषखपरी से भयभीत होकर चिल्ला रही थी। आवाज सुनकर विषखपरी ने झटके से गर्दन घुमाकर गिलहरी को देखा फिर साँप की तरह जीभ लप–लपाते हुए अपना रुख उसी की ओर कर दिया। विषखपरी को अपनी ओर आता देख गिलहरी की किट–किट की आवाज अचानक तेज हो गई। तभी मेरी निगाह गिलहरी के पास उसके एक छोटे–से बच्चे पर पड़ी, जो डर के मारे साल से चिपका हुआ था। वह मोटी और सूखी डाल का आखिरी सिरा था, जहाँ गिलहरी अपने बच्चे के साथ बैठी हुई थी। विषखपरी से बचकर भाग निकलने का अन्य कोई रास्ता उसके पास न था। अपनी जान बचाने के लिए वह सम्भवतः पेड़ से कूद भी सकती थी, मगर उस नन्हीं–सी जान के लिये क्या करे।

गिलहरी की चीख–पुकार अब मेरी समझ में आने लगी थी। गिलहरी और विषखपरी के बीच का फासला जैसे–जैसे कम होता जा रहा था, गिलहरी की आवाज भी उतनी ही तेज और कर्कश होती जा रही थी। विषखपरी को निरन्तर उसी दिशा में बढ़ते देख मुझ पर जड़ता–सी छाने लगी। मैं किंकर्तव्यविमूढ़–सा देख तो सब कुछ रहा था, पर कुछ कर सकने की स्थिति में नहीं था। उधर जीवन–मृत्यु का संघर्ष चल रहा था। दोनों पक्षों के बीच की दूरी निरन्तर कम होती जा रही थी। समय के साथ–साथ फासला और कम हुआ। गिलहरी के चिल्लाने में और तेजी आई, अब तो उसका शरीर भी डर के मारे काँप रहा था। मेरी पलकों ने झपकना छोड़ दिया था। मैं सम्मोहित–सा सब कुछ देखे जा रहा था। अब दोनों के बीच की दूरी बहुत कम रह गई थी । बड़े संघर्ष की घड़ी थी। गिलहरी पूरी ताकत से किट–किट–किट–किट का शोर कर रही थी। ममता की मारी, बेचारी और कर भी क्या सकती थी। कौन था जो उस संकट की घड़ी में उसका दर्द समझता। भयभीत बच्चा मजबूती से डाल को पकड़े, अपनी सुन्दर–सी, गोल–गोल, काली–काली आँखो से टुकुर–टुकुर अपनी माँ को देखे जा रहा था, मानो गुहार कर रहा हो, ''माँ–माँ मुझे बचा लो।''

शायद हिम्मत दिलाने के लिये, दो कदम आगे कूदते हुए गिलहरी ने अपने मासूम बच्चे को ममता भरी नजरों से देखा, सम्भवतः मूक संवाद हो रहे हो, ''मेरे लाल! तू डर मत। फिर मैं जो हूँ, तेरी माँ, तेरे पास............. ।''विषखपरी थोडा और आगे बढ़ी। गिलहरी का सुकोमल बच्चा, एक स्वादिष्ट व्यंजन

के रूप में बार–बार उसे अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। गिलहरी उसके नापाक इरादे को भाँप चुकी थी। माँ की ममता तो जगजाहिर है ही, मगर कोई उसका गला घोंटे तो, उसे बर्फ से आग बनते उसे देर नहीं लगती। थोड़ी देर पहले जो गिलहरी डर के मारे कॉप रही थी, उसने अब काँपना, चीखना व चिल्लाना बिल्कुल बंद करके विकराल रूप धारण कर लिया। उसकी आँखें क्रोध से तम–तमाने लगी। नाखून और पंजे ''फौरी कार्यवाही'' के लिये तैयार हो गये। घुर्राने के अंदाजे में खुले हुए मुँह से उसके पैने और लम्बे दाँत भी दिखाई देनेलगे, जो कि कुछ आर–पार करने का संकेत दे रहे थे। उसने अपनी कमर को टेड़ी और ऊंची करके शरीर की मुदा ऐसी बना ली थी, जैसे कुत्तों के बीच घिर जाने पर बिल्ली बना लेती है।

गिलहरी की आँखें पूरी समग्रता से विषखपरी की मनःस्थिति का जायजा ले रही थीं। अपने लाडले की खातिर किसी भी क्षण उसे अपना जीवन दांव पर लगा देना था। अब वो पूरी तरह तैयार थी, विषखपरी से दो–दो हाथ करके निपट लेने के लिए। गिलहरी का रौद्ररूप देखकर विषखपरी थोड़ा सपकपायी, फिर जल्दी ही उसे अपनी शारीरिक क्षमता का भान हुआ तो अहंकार के वशीभूत होकर जीभ लहराते हुए उसने मदहोश नजरों से गिलहरी को देखा। दोनों ही प्राणी उसे मामूली वजूद के मालूम पड़ रहे थे। फासला अब नाम मात्र का ही रह गया था। विषखपरी थोड़ा रुकी। अपने शरीर को पीछे समेटकर बच्चे पर झपटना ही चाहती थी कि चीते जैसी फुर्ती के साथ गिलहरी एकदम उछली और विषखपरी की पीठ पर आ गई। बड़ा ही अद्भुत नजारा था। नुकीले नाखूनों को विषखपरी के पेट में चुभोते हुए गिलहरी ने मुँह फाड़ कर उसकी गर्दन को भी अपने दाँता की गिरफ्त में ले लिया।

विषखपरी जहाँ थी, वहीं रूक गई, उसकी शायद उसकी समझ में आ चुका था कि अब जरा–सा भी आगे बढ़ना खतरे से खाली नहीं है। वो बेबस और लाचार हो चुकी थी। देखते ही देखते पासा पलट गया था । बड़ी दयनीय स्थिति में उसने कमर को दाँये–बाँये हिलाकर जैसे आत्मसमर्पण कर दिया, ''मुझसे गलती हो गई, मुझे माफ कर दो। पर गिलहरी को इस दृष्ट की नीयत पर जरा भी भरोसा न था। क्षमा याचना ठुकरा कर एक बार पुनः उसने दाँत और नाखूनों से उस पर प्रहार कर दिया। पीड़ा से विषखपरी का मुँह खुला का खुला रह गया। जान बचाने का जब कोई रास्ता न सूझा तो धीरे से वो घूमी और जिस रास्ते से पेड़ पर चढ़कर आयी थी उसी रास्ते से धीरे–धीरे नीचे उतरने लगी। मौत का साया बन गिलहरी उसकी पीठ पर ही बनी रही।

पेड़ से उतरकर विषखपरी थोड़ी ही दूर चली थी कि गिलहरी ने एक बार फिर उसकी पीठ और गर्दन पर अपने दाँत और नाखूनों का प्रयोग कर दिया। विषखपरी तिल–मिला कर रह गई। उसी पल गिलहरी उसकी पीठ से नीचे कूदी, और हर्षोल्लास में जोर से चिल्लायी, ''किट–किट–किट–किट''। उधर सहमा हुआ बच्चा जो काफी देर से अपनी बहादुर माँ का साहस देख रहा था, आवाज सुनकर चहक उठा और अपनी माँ को पुकारने लगा, ''किट–किट–किट–किट'' | माँ को आता देख बच्चा आत्म विभोर होकर चिल्लाने और फुदकने लगा। वो अपनी माँ के हृदय में समा जाने को व्याकुल हो उठा। आधा मिनट भी न बीता होगा कि गिलहरी अपने लाडले के पास आ गई और उसके मुँह से अपना मुँह छुआ–छुआ कर उसे चूमने चाटने और पुचकारने लगी। माँ का लाड़–दुलार बच्चे से संभाले नहीं संभल रहा था। खुशी के आवेग में उसका पूरा शरीर कांपने लगा। तभी गिलहरी ने अपने लाडले को मुँह में दबाया और उस ले गई कहीं अन्यत्र, किसी सुरक्षित स्थान की ओर।

मैं हक्का–बक्का–सा इधर–उधर देख रहा था तभी किसी के हाथ का स्पर्श मैंने अपने कन्धे पर महसूस किया। चौंककर देखा, वो मेरे मित्र ही थे जिनके घर पर मैं प्यास व थकान मिटाने जा रहा था।

# शनि का तैतीसा यंत्र और इसका महत्व

**– स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती, वृन्दावन**

शनि का तैतीसा यंत्र पीड़ा निवारण का यंत्र कहा गया है। शनि की ढय्या हो, शनि की साढ़े साती हो या शनि की दशा, महादशा हो सभी प्रकार के कष्ट निवारणों में शनि का यह तैतीसा यंत्र अद्भुत लाभ देता है। इसके प्रयोग करने के तरीके यहाँ बताये जा रहे हैं–

**(1)** यदि घर में बहुत कलह होती हो और परिवार का कोई सदस्य घर के पूरे वातावरण को खराब कर रहा हो तो उसे सुधारने के लिये जब भी उसे भोजन परोसें तो घी या तेल से रोटी पर उंगली से तैंतीसा यंत्र बना दें और वह घी वाली रोटी उसे भोजन में देवें।

**(2)** किसी दवा के चूर्ण को किसी मरीज को देना हो, उस दवा के पाउडर पर भावनात्मक रूप से तैंतीसा यंत्र का आँकड़ा लिख दें फिर शनि का नाम लेकर उसे वह दवा का चूर्ण खिला दें, लाभ होगा

**(3)** घर में बहुत कलह होती हो तो जिस व्यक्ति के नाम से कलह हो रही है उस व्यक्ति के नाम से दो गर्म रोटियों पर तेल से तैंतीसा यंत्र लिखकर सूर्योदय के पूर्व प्रति शनिवार को मौन रखकर गाय को रोटी खिला दें और उस सदस्य के सुधार की प्रार्थना करें , लाभ होगा।

**(4)** अमावस्या के दिन तैतीसा यंत्र अपने मुख्य द्वार पर, देवालय के द्वार पर, देवालय की चौकी पर, देवालय के अंदर की दीवार पर सिंदूर में तेल मिलाकर उस सिंदूर से लिख दें। यंत्र बनाकर उसका विधिवत शनि मंत्रों से अक्षत पुश्प से पूजन करके उसके आगे धूप, अगरबत्ती से आरती कर दें। प्रति शनिवार , प्रति अमावस्या इस यंत्र को अगरबत्ती लगायें या इसके नाम से तेल का दिया जलायें तो घर में किसी भी प्रकार की घटना–दुर्घटना नहीं होती, संकट टल जाते हैं।

**(5)** एक काले कपड़े पर सिंदूर में तेल मिलाकर उस तेल के सिंदूर से तैतीसा यंत्र बना दें फिर उस यंत्र वाले कपड़े पर एक बिना पानी का मगर जटा वाला नारियल रखकर बांध दें। किसी मरीज को दवा काम नहीं कर रही हो, कोई व्यक्ति शारीरिक रूप से भारी तकलीफ में हो तो उसके लिये ऐसा ही नारियल बांधकर उसके पूरे शरीर से सिर से पैर तक ७ बार उतारकर शनि मंत्र के साथ उसे तुरन्त जल में बहा देवें। यह उपाय शनिश्चरी अमावस्या को करने से अधिक लाभ देता है। अधिक कष्ट होने पर यदि मरीज अस्पताल में भर्ती है तो यह उपाय शनिवार के दिन अस्पताल में ही करके शरीर से उतारकर उसे जल में विसर्जित करा दें। शीघ्र लाभ होगा।

**(6)** काजल को तनिक से तेल में मिलाकर इससे बनी स्याही से सफेद कागज पर निम्नलिखित ३३ का यंत्र शनिवार की रात्रि में लिख दें।

**।।शनि का तैतीसा यंत्र।।**

| | | |
|---|---|---|
| 12 | 7 | 14 |
| 13 | 11 | 9 |
| 8 | 15 | 10 |

काले तिल, उड़द और तेल से यंत्र की पूजा करें। फिर यंत्र पर यह चीजें थोड़ी–थोड़ी मात्रा में रखकर पोटली–सी बनाकर शनि पीड़ाग्रस्त व्यक्ति के सिर से पैर तक सात बार उतारकर किसी नदी

या जलाशय में यंत्र को डाल दें। विसर्जित करते समय शनिदेव को प्रणाम करें। यह क्रिया ग्यारह शनिवार तक करें। इस यंत्र से भी की पीड़ा घटती है।

(7) एक सफेद कपड़ा लें। उस आधा मीटर सफेद कपड़े पर काजल की स्याही से यह तैतीसा यंत्र लिखें, फिर उस यंत्र के ऊपर एक बिना पानी का सूखा नारियल रखकर बांध दें और जिसे शनि की ढय्या हो, जिसे शनि की साढ़े साती हो या जिसे शनि की महादशा या अर्न्तदशा का समय चल रहा हो, उसके शरीर से 7 बार उतारकर इसे जल में बहा दें। यह उपाय अमावस्या के अमावस्या 7 अमावस्या को करना चाहिये। शनि का समय शुभ फल देने लगेगा।

(8) एक भोजपत्र लें और उस भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से (अष्टगंध में पानी मिलाकर उससे) अनार की कलम लेकर भोजपत्र पर यह यंत्र किसी भी शनिवार के दिन बना लें फिर उसे देवालय में एक स्टील की प्लेट में रखे विधिवत उसका अक्षत, पुष्प, गंध, धूप, दीप से पूजन करें व शनि मंत्र का पाठ करें। फिर उस भोजपत्र को चार बार मोड़कर उसके ऊपर कलावा बांधकर एक ताबीज जैसा बना लें और उसे देवालय में आने वाले शनिवार तक रखा रहने दें। आने वाले शनिवार को वह भोजपत्र वाला बंधा ताबीज दो गर्म रोटियों पर रखकर सूर्योदय के पूर्व किसी भी भैंसे को खिलाकर आ जायें। सोकर उठने से लेकर भैंसे को रोटी खिलाने तक मौन व्रत रखें तब लाभ होगा। किसी भी रुके कार्य की सफलता के लिये, कठिन समस्या के समाधान के लिए शनिदेव के आगे 9 शनिवार तक लगातार यह प्रयोग करने का संकल्प लें। 9 शनिवार यह उपाय करने से कठिन से कठिन समस्या के समाधान के लिये भी मार्ग निकल जायेगा। इसके बीच मन में यदि भ्रम पैदा होने लगे कि जब से यह कोई भी प्रयोग प्रारंभ किया है तब से और कष्ट बढ़ रहा है तो उससे न घबरायें। कई बार शनिदेव हमारी परीक्षा लेते हैं कि हम प्रकृति चक्र के दिये कष्ट से क्यों बचना चाहते हैं और कई बार आगे आने वाली बड़ी दुर्घटना हमारे अच्छे उपाय प्रयोगों के फलस्वरूप छोटा घटना का रूप धारण कर लेती है। इस प्रकार से मन को मजबूत कर लें कि संयम–नियम, पालन न टूटे तभी कार्य में सफलता मिल पायेगी।

(9) एक लोहे के पतरे पर या तांबे के पात्र पर यह तैंतीसा शनि यंत्र अंकित करा लें और नित्य इस यंत्र को तेल से शनिमंत्र के साथ स्नान करायें, फिर स्नान वाला तेल शनियंत्र से बाहर कटोरी में ले लें और फिर उस तेल में अपना चेहरा देखकर सारे कष्ट, परेशानी शनिदेव को सुनायें और बार–बार कष्ट से मुक्ति पाने की प्रार्थना करें । फिर उस तेल को नित्य ही घर के दिये में जला दें जो भी प्रार्थना की गई है यदि वह प्रार्थना ४० दिनों तक लगातार पूरी श्रद्धा, भक्ति से की जाती रही तो जरूर शीघ्र लाभ सामने आयेगा। वह प्रार्थना व्यक्ति की जरूर कबूल हो जायेगी।

## HELMET का शाब्दिक अर्थ समझें और आत्मसात करें

– ललित शर्मा (सर जी)

H - Head (सिर)
E - Ear (कान)
L - Lips (होठ)
M - Mouth (मुँह)
E - Eye (आँख)
T - Tooth (दाँत)

**हेलमेट, इन सभी अंगों को सुरक्षा प्रदान करता है। अतः बिना हेलमेट के दोपहिया वाहन बिल्कुल न चलायें। ये मजबूरी नहीं जरूरत समझें।**

# सामाजिक असन्तुलन

– जयप्रकाश शर्मा, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़

कहा जाता है कि एक कुठिया के जौ एक से होते हैं अथवा आपस में जौ छोटा बड़ा हो सकता है, परन्तु उसकी जाति बड़ी नहीं हो सकती। मैथिल ब्राह्मण समाज भी सब एक थैली के चट्टे–बट्टे हैं, परन्तु आज समाज में असमानता बढ़ रही है। आर्थिक दृष्टि से यह समाज चार भागों में बांटा जा सकता है, अति गरीब, गरीब, मध्यवर्गीय एवं उच्च मध्यमवर्गीय। जिनमें 4:3:3:2 का अनुपात 40 प्रतिशत लोग आज भी अति गरीब हैं, इनमें शिक्षा का अभाव है। सारा परिवार भरण पोषण की जुगत में नौकरी या मजदूरी पर लगा रहता है। 30 प्रतिशत लोग गरीब है, जिनमें बेटियां पढ़ी लिखी हैं लड़के सामान्यतः स्नातक शिक्षा तक पढ़ पाते हैं और नौकरी की तलाश में इधर–उधर घूमते हैं, पर नौकरियां हैं कहाँ? माता–पिता मेहनत मजदूरी करके परिवार का भरण पोषण कर पाते हैं, 30 प्रतिशत परिवार नौकरी पेशा है, जिनमें दो या दो से अधिक लोग नौकरी अथवा कोई व्यवसाय करते हैं, यह सामान्य स्थिति के लोग हैं, जो समाज एवं सामाजिक संगठनों की भी चिंता करते हैं और आवश्यकता पढ़ने पर संगठनों की भी चिंता करते हैं और आवश्यकता पढ़ने पर संगठनों की आर्थिक सहायता भी करते हैं। 20 प्रतिशत लोग सामान्य से लेकर उच्च श्रेणी तक के उद्योगपति हैं, कुछ अंगुली पर गिनने लायक लोगों को छोड़कर शेष का समाज से कोई लेना देना नहीं है, वसह केवल अपने व्यापार और परिवार की सोचते हैं। विडम्बना यह है कि ऐसे लोगों को ही समाज अधिक मान्यता देता है और उनकी चाटुकारिता करता है। इस असमानता का दूर करने के लिए मैथिल ब्राह्मण समाज के बुद्धजीवियों एवं सामाजिक संगठनों को आगे आना होगा।

मेरे विचार से कुछ कार्यों पर विचार कर लिया जाय तो असन्तुलन कुछ कम किया जा सकता है। जैसे– विवाह आदि कार्यों में धनाढय लोगों की बराबरी करना यथाकीमती मैरिज होम, बैंक्वट हाल, होटल करना तथा भोजन में नाना प्रकार के आइटम जिनको अधिकांश लोग छूने तक नहीं पहुंचते। मैं एक ऐसे विवाह में होटल रोयल रेजीडेन्सी गया, जहां 50 से अधिक प्रकार की सब्जियां, तीन चार प्रकार के ढाबे, जंक फूड के लगभग 20 स्टाल थे और मुझ जैसे खाने वाले केवल मिस्सी रोटी तथा दाल खा रहे थे और यहां भी पूरी भीड़ थी। पाठक स्वयं सोचें इसमें कितना धन का अपव्यय हुआ, यह काम चार सब्जियां दाल रोटी, साग–पूड़ी, दो–चार स्टॉल से भी चल सकता था। पर बाहरी पैसे की शान। मेरे विचार से यह भोजन का राष्ट्रीय अपव्यय है और असन्तुलन बढाता है। गरीब, अमीर सब लगभग एक सा ही व्यवहार इन कार्यक्रमों में करते हैं। चाहे कितना ही कर्ज क्यों न हो जाये। पहले अमीर लोगों में भी साधारण प्रकार से विवाह आदि होते थे, पर आज तो हालात ही अजीब हैं। आज इन फिजूल खर्चियों को रोकना अनिवार्य एवं आवश्यक हो गया है। समाज को इस ओर अवश्य ही ध्यान देने की जरूरत है।

# वेलेन्टाइन डे

– स्वामी ओमानन्द सरस्वती (नैमसारण्य)

**14 फरवरी** (वेलेन्टाइन डे) को पश्चिमी देशों में युवक–युवतियाँ, एक–दूसरे को ग्रीटिंग कार्ड्स, फूल आदि देकर 'वेलेन्टाइन डे' मनाते हैं। यौन–जीवन संबधी परम्परागत नैतिक मूल्यों का त्याग करने वाले देशों की चारित्रिक सम्पदा नष्ट होने का मुख्य कारण **'वेलेन्टाइन–डे'** हैं। जो लोगों को अनैतिक जीवन जीने को प्रोत्साहित करते हैं। इससे उन देशों का अधःपतन हुआ है। इससे जो समस्याएँ पैदा हुई, उनको मिटाने के लिए वहाँ की सरकारों को स्कूलों में 'केवल संयम' अभियानों पर करोड़ों डॉलर (अरबों रुपये) खर्च करने पर भी सफलता नहीं मिलती। अब यह कुप्रथा हमारे भारत में भी पैर जमा रही है। हमें अपने परम्परागत नैतिक मूल्यों की रक्षा करने के लिए ऐसे 'वेलेन्टाइन डे' बहिष्कार करना चाहिए।

## 'वेलेन्टाइन डे' कैसे शुरु हुआ ?

रोम के राजा क्लाउडियस ब्रह्मचर्य की महिमा से परिचित रहे होंगे। इसलिए उन्होंने अपने सैनिकों की शादी करने के लिये मना किया था ताकि वे शारीरिक बल और मानसिक दक्षता से युद्ध में विजय प्राप्त कर सकें। सैनिकों को शादी करने के लिए जबरदस्ती मना लिया गया था, इसलिए वेलेन्टाइन, जो स्वयं ईसाई पादरी होने के कारण ब्रह्मचर्य के विरोधी नहीं हो सकते थे, ने गुप्त ढंग से उनकी शादियाँ करायीं। राजा ने उनको दोषी घोषित किया और उन्हें फाँसी दे दी गयीं। सन् 496 से पोप गेलेसियस ने उनकी याद में 'वेलेन्टाइन डे' मनाना शुरु किया।

'वेलेन्टाइन डे' मनानेवाले लोग वेलेन्टाइन का ही अपमान करते हैं क्योंकि वे शादी के पहले ही अपने प्रेमास्पद को वेलेन्टाइन कार्ड भेजकर उनसे प्रणय–संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं। यदि वेलेन्टाइन इससे सहमत होते तो वे शादियाँ कराते ही नहीं।

अतः भारत के युवान–युवतियाँ शादी से पहले प्रेमदिवस के बहाने अपने ओज–तेज–वीर्य का नाश करके सर्वनाश न करें।

प्रेम दिवस जरुर मनायें लेकिन प्रेमदिवस में संयम और सच्चा विकास लाना चाहिए। युवक–युवती मिलेंगे तो विनाश–दिवस बनेगा। इस दिन बच्चे–बच्चियाँ माता–पिता का आदर–पूजन करें और उनके सिर पर पुष्प रखें प्रणाम करें तथा माता–पिता अपनी संतानों को प्रेम करें। संतानें अपने माता पिता के गले लगें। इससे। इससे वास्तविक प्रेम का विकास होगा। बेटे–बेटियाँ माता–पिता में ईश्वरीय अंश देखें और माता–पिता बच्चों में ईश्वरीय अंश देखें।

तुम भारत के लाल और भारत की लालियाँ (बेटियाँ) हो। प्रेमदिवस मनाओ, अपने माता–पिता का सम्मान करो और माता–पिता बच्चों को स्नेह करें। पाश्चात्य लोग विनाश की ओर जा रहे हैं। वे लोग ऐसे दिवस मनाकर यौन रोगों का घर बन रहे हैं, अशांति की आग में तप रहे है।

मेरे प्यारे युवक–युवतियों और उनके माता–पिता! आप भारतवासी हैं। दूरदृष्टि के धनी ऋषि मुनियों की संतान है। 'वेलेन्टाइन डे' के नाम पर बच्चों युवक–युवतियों के ओज–तेज का नाश हो, ऐसे दिवस को प्रेम करके अपने दिल के परमेश्वर को छलकने दें। काम–विकार नहीं, रामरस, प्रभुरस, प्रभुप्रेम........... ।

# एक विद्यार्थी की वेदना

**लेखक – रघुवीर सहाय शर्मा, सासनी**

चाहे पास करो या फेल करो, दिन रात तो पढ़ते रहते हैं।

पढ़ने की घड़ियाँ थोड़ी हैं और लाइन पुस्तक की लम्बी।
जब सारी दुनियाँ सोती हे, हम पन्ने पलटा करते हैं।
चाहे पास करो या फेल करो, दिन रात तो पढ़ते रहते हैं।।

पापा पढ़ने की कहते हैं, मम्मी सोने की कहती हैं।
रख मेज के ऊपर पुस्तक हम आराम से सोते रहते हैं।
चाहे पास करो या फेल करो, दिन रात तो पढ़ते रहते हैं।।

शर्मा जी हिन्दी की कहते– श्री सिंह साहब भूगोल कहें।
गुप्ता जी इंगलिस की कहकर–स्कूल में डांटा करते हैं।
चाहे पास करो या फेल करो, दिन रात तो पढ़ते रहते हैं।।

साइंस अच्छी नहीं लगती और मैथ से डर सा लगता है।
अच्छा है घंटा पी0टी0 का हम खेल खेल में पढ़ते हैं।।
चाहे पास करो या फेल करो, दिन रात तो पढ़ते रहते हैं।।

# नारी की दुर्दशा

**– दिव्या मिश्रा, भगवान नगर, अलीगढ**

नारी तो जन्म से ही अबला है,
मर्दों से सहारा माँगती है।
दुनिया को जन्म तो देती है,
अपने लिए गुजारा माँगती है।।

बदकिस्मत अबला नारी की,
खामोश कहानी चलती है।
हर युग के बदलते साये में,
इसकी तकदीर बदलती है।।

कभी बाबुल से कभी भाई से,
कभी इज्जत के रखवाले से।
कभी अपने कोख के जाये से,
कुछ प्यार उधार वो मांगती है।।

जब देश लड़ाई लड़ते हैं,
फूल इस डाली के झड़ते हैं।
जर माल समझकर इसको भी,
जंगबाज कभी लूट लेते हैं।।

इसकी इज्जत करने वाले जब,
तूफान हवस का बन जायें।
फिर अपने आप बचाने को
जीवन से किनारा माँगती हैं।।

# बैंगन का चटपटा अचार

– **श्रीमती चन्द्रकान्ता शर्मा**, अलीगढ

## अचार बनाने के दौरान सावधानियाँ–

1– लोहे, ताँबे तथा पीतल के बरतनों में कभी भी अचार नहीं बनाना चाहिए।

2– नमक, सिरका, तेल तथा अम्ल हमेशा बतायी गयी मात्रा में ही डालना चाहिए।

3– अचार के बर्तन का ढक्कन हमेशा कसकर लगाना चाहिए ताकि हवा नहीं लग सके। धूप हमेशा दिखाते रहना चाहिए।

4– अचार निकालते समय हमेशा सूखा हाथ अथवा चम्मच डालिए। गीला हाथ डालने से अचार में नमी प्रवेश कर जाने से फफूँदी लग जाती है।

5– अचार बनाने के लिए हमेशा ताजे फल अथवा सब्जी प्रयोग में लाना चाहिए।

6– अचार में प्रायः एक परत सफेदी परत जम जाती है। ऐसी अवस्था में इसे हटाकर इसमें एक प्रतिशत एसिटिक एसिड डाल देना चाहिए।

7– कभी–कभी अचार का रंग काला पड़ने लगता है। यदि सेंधा नमक तथा फूल सहित लौंग का प्रयोग किया जाय तो ऐसा विकार उत्पन्न हो जाता है।

8– अचार को शुष्क तथा ठण्डे भण्डार में रखना चाहिए। नम तथा ऊँचे तापमान वाले भण्डार में रखने से इनमें फफूंदी लग जाती है तथा इनका रंग खराब हो जाता है।भी अचार का रंग काला पड़ने लगता है। यदि सेंधा नमक तथा फूल सहित लौंग का प्रयोग किया जाय तो ऐसा विकार उत्पन्न हो जाता है।

9– अचार को शुष्क तथा ठण्डे भण्डार में रखना चाहिए। नम तथा ऊँचे तापमान वाले भण्डार मे रखने से इनमें फफूँदी लग जाती है तथा इनका रंग खराब हो जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| **बैंगन** | **1 किलो** | **बड़ी इलायची** | **आधा ग्राम** |
| **नमक** | **100 ग्राम** | **लौंग** | **आधा ग्राम** |
| **लाल मिर्च** | **20 ग्राम** | **राई** | **10 ग्राम** |
| **हल्दी** | **10 ग्राम** | **सरसों तेल** | **200 ग्राम** |

## बनाने की विधि–

1– नरम बैंगन लेकर धो लीजिए।

2– टुकड़ों को 2 प्रतिशत नमक के पानी में पाँच मिनट तक पका लें।

3– अब इनका पानी निथारकर लगभग 2 घंटे तक धूप में सुखा लें।

4– बारीक पीसे हुए मसालों को बैंगन के टुकड़े में मिलाकर जार में दबाकर भर दीजिए। ऊपर से गरम करके ठण्डा किया हुआ तेल डाल दीजिए।

5– जार को तीन–चार दिन तक धूप में रखिए। यह अचार तीन–चार दिन बाद खाने योग्य हो जाएगा।

MAITHIL BRAHMIN YouTube
Whatsapp: 9259647216
Paytm Account: 9259647216

# श्री कृष्ण ज्ञान – गीता (पद्यानुवाद)

**गीता का ज्ञान जन–जन तक पहुँचे, इस हेतु पं0 केदारनाथ जी ''चंचल'' ने गीता का सरल हिन्दी पद्य में अनुवाद किया है। कवि रत्न पं0 प्रेम किशोर पटाखा जी के सहयोग से हम गीता के इस पद्यानुवाद को धारावाहिक रूप से पत्रिका में प्रकाशित कर रहे हैं, आशा है गीता प्रेमी अवश्य ही ज्ञानार्जन करेंगे। – प्रबन्ध संपादक**

## श्री गीता माहात्म्य

जो शास्त्र गीता पुण्यमय का पठन करता सर्वदा।
वह विष्णुपद है प्राप्त करता शोक भयगत हो सदा।।1।।

अध्ययन गीता और प्राणायाम से जो युक्त है।
वह पूर्व जन्म कुपाप से नर सर्वथा ही मुक्त है।।2।।

ज्यों स्वच्छ जल का स्नान करता देह को मलहीन है।
त्यों पाठ गीता स्नान करता विश्व–मल को क्षीण है।।3।।

है मनुज का कर्त्तव्य गीता–गान करना अति महा।
भगवान् ने निजकमल–मुख से है स्वयं जिस को कहा।।4।।

यह विष्णु–मुख से प्रगट गीता है सुधा सम मान लो।
गंगा–उदक गीता पिये नर मुक्त होता जान लो।।5।।

सब शास्त्र गो हैं कृष्ण दोग्धा वत्स हैं अर्जुन तथा।
विद्वान भोक्ता दुग्ध के जो अमृत मय हैं सर्वदा।।6।।

## प्रथम अध्याय

### धृतराष्ट्र बोले–

शुभ धर्म–थल कुरु क्षेत्र में संग्राम हित समवेत हो।
मेरे सुतों ने, पाण्डवों ने, क्या किया संजय कहो।।1।।

### संजय बोले–

यों ब्यूह रचना युक्त पाण्डव को अनी को देख कर।
कहने लगा गुरु से सुयोधन, इस तरह कर जोड़कर।। 2।

तब धृष्टद्युम्न सुशिष्य द्वारा, की गई है जो खड़ी।
गुरुदेव देखो पाण्डवों की, यह अनीं शोभा जड़ी।।3।।

इस नव अनी में वीर कितने, भीम पार्थ समान है।
सात्यकि विराट महारथी, राजा द्रुपद श्रीमान हैं।।4।।

भट चेकितान सुधृष्टकेतु, महान काशी राज है।
पुरुजित तथा श्री कुन्ति भोज व शैब्य नरपतिराज है।।5।।

नृप युधामन्यु द्रुपद–सुता के पाँच सुत रण धीर हैं।
रण केशरा हैं उत्तमौजा, उत्तरापति वीर है।।6।।

द्विजवर हमारे पक्ष में, जो–जो प्रधान विशेष हैं।
कहता हूँ उन का नाम मैं, सुन लो, सकल समरेश हैं। 7।

स्वयमेव आप विकर्ण कृप और अश्वथामा हैं खड़े
विजयी जयद्रथ सोम–सुत, हैं कर्ण भीष्म बली बड़े।।8।।

और भी हैं वीर अगणित, शक्ति में, अतिशश्य प्रबल जो।
प्राण की परवाह जिनको है नहीं रण कुशल जो।।9।।

श्री पितामह से सुरक्षित है हमारी सैन्य दुर्जय।
उधर रक्षित भीम द्वारा पाण्डवों को अनी निर्भय।।10।

निज–निज जगह से आप सब, अपने हृदय में यह धरें।
सब ओर से बस पूज्य दादा की सदा रक्षा करें।।11।

यों द्रोण से कहते हुये सुन कर सुयोजन के वचन।
भीष्म ने की शंख ध्वनि ज्यों उच्च स्वर में सिंह गर्जन।।12।।

फिर बाद उसके शंख, ढोल, मृदंग वाद्य बजे कई।
तब हो गई चारों दिशायें गगन तक यों ध्वनि मयी।।13।।

फिर श्वेत घोड़ों युक्त रथ पर, पार्थ–मधुसूदन चढे।
कर शंख रव सुन्दर अलौकिक क्षेत्र में भागे बढ़े।।14।।

ले पान्चजन्य सुशंख माधव श्याम ने नादित किया।
औ देवदत्त व पौण्ड्र अर्जुन–भीम ने वादित किया।।15।।

तब धर्मराज अनन्त विजयम् शंख को कर में लिया।
मणि पुष्प नकुल सुघोष को सहदेव से घोषित किया।।16

युयुधान काशीराज नरपति, धृष्टद्वम्न महाबली।
वह भट विराट तथा शिखंडी धनुष थी जिनकी भली।।17।।

राजा द्रुपद अभिमन्यु एवं, द्रोपदी के सुत बली।
ले शंख निज–निज हाथ में सबने निकाली ध्वनि भली।।18।।

ज्यों–ज्यों भयंकर शंख रथ, रण–क्षेत्र में बढ़ने लगा।
त्यों–त्यों कलेजा कौरवों का, भीति से कढ़ने लगा।।19।।

फिर युद्ध हित लख कौरवों को, शस्त्र से सज्जित खड़े।
वर वीर अर्जुन तमक कर अपनी जगह से उठ पड़े।।20।।

भगवान से कहने लगे हे नाथ ऐसा कीजिये।
अब मध्य में दोनों दलों के, रथ खड़ा कर दीजिये।।21।।

उस पक्ष में है कौन भट, यह देखना है अब मुझे।
किससे करुँ संग्राम मैं यह सोचना भी है मुझे।।22।।

अति दुष्ट कौरव पक्ष में नृप कौन आये हैं यहाँ।
देखूँ सुयोधन का खड़ा है कौन शुभ चिन्तक कहाँ।।23।।

## संजय बोले–

भगवान ने अर्जुन विनय को ध्यानपूर्वक सुन लिया।
झट मध्य में दोनों दलों के विषद रथ को कर दिया।।24।।

फिर कृष्ण बोलें पार्थ हे कौरव अनी को देख लो।
है भीष्म–द्रोण खड़े हुये सम्मुख तुम्हारे देख लो।25।।

तब पार्थ ने देखनाचतुर्दिक थे पिता भ्रात खड़े।
मामा पितामह पुत्र औ आचार्य मित्र बड़े–बड़े।।26।।

फिर देखते ही समाने निज स्वजन परिजन को सकल।
श्री कृष्ण से कहने लगे कुन्ती–तनय होकर विकल।।27।।

हे कृष्ण निज परिवार को रण–क्षेत्र में लख कर सुनो।
मम गात्र होता है शिथिल, मुख सूखता है अब सुनो।।28।।

है देह मेरी काँपती औ, चरण रुकता है नहीं।
है हो रहा रोमांच तन में झूठ है केशव नहीं।।29।।

मन भ्रमित होता है तथा तन की त्वचा है जल रही।
हूँ खड़ा होने में विवश, गाण्डीव कर से गिर रही।।30।।

विपरीत लक्षण देखता हूँ कृष्ण इस संग्राम में।
कैसे स्वदन को मार कर कालिख लगाऊँ नाम में।।31।।

यह राज–सुख अथवा विजय अब चाहिये मुझको नहीं।।
हे कृष्ण! वैभव–जोश यह दिखलाइये मुझको नहीं।।32।

जिनके लिये में चाहता था, राज सुख जग धाम में।
निज प्राण की वे छोड़ आशा हैं खड़े संग्राम में।।33।

साला ससुर मामा पितामाह पुत्र सम्बन्धी सभी।
आचार्य से निजयुद्ध करना, क्या उचित है हरि कभी।।34।

इस लोक क्या त्रैलोक्य का भी राज मिल जावे कहीं।
वे मार लें मुझको तदपि मैं मार सकता हूँ नहीं।।35।।

हे कृष्ण! मुझको क्या मिलेगा कौरवों को मारकर।
मैं पाप भागी ही बनूँगा दुष्ट को संहार कर।।36।।

इस हेतु माधव बन्धुओं का अब उचित बध है नहीं।
कुछ मारकर इनको मुझे सुख प्राप्त होगा क्या कहीं।।37।

यद्यपि विपक्षी के ह्रदय पर पर लोभ वश अज्ञान है।
कुल नाशबंधु–विरोध पातक का न ध्यान है।।38।।

पर हे प्रभो! कुलनाश–अघ को सब तरह से जान कर।
हम लिप्त हों फिर पाप में क्या पुण्य उसको मानकर।39।।

कुल धर्म नष्ट होता है बस वंश ही के नाश से।
है धर्म का विध्वंस होता अधम पाप विकास से।।40।।

कुल नारियाँ हैं बिगड़ जाती पाप के परिणाम से।
तब वर्ण–शंकर जन्म ले करता अँधेरा धाम से।।41।।

हैं फिर कुलघ्नों को तथा कुल को नरक में डालते।
संकर पितर जन के सुकर्मों को निरन्तर घालते।।42।।

# शादी होने के बाद वर–वधू को सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए निम्न प्रतिज्ञाएं हर माह एकादशी के दिन अवश्य पढ़नी चाहिए

**संकलक– श्रीमती गुन्जन मिश्रा,** बालूगंज, आगरा

## वर की प्रतिज्ञाएं

**मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि–**

- धर्मपत्नी अर्धांगिनी के साथ अपने व्यक्तित्व को मिलाकर सुखमय जीवन की सृष्टि करता हूँ। अपने शरीर के अंगों की तरह धर्मपत्नी का ध्यान रखूँगा।
- धर्मपत्नी को गृहलक्ष्मी का महान अधिकार सौंपता हूँ। जीवन की गतिविधियों के निर्धारण में इनके परामर्श को महत्व दूँगा।
- अर्धांगिनी के रूप, स्वास्थ्य, स्वभाव, गुण–दोष एवं अज्ञानजनित विकारों को चित्त में नहीं रखूँगा, उनके कारण असंतोष नहीं व्यक्त करूँगा, स्नेहपूर्वक सुधारने या सहन करते हुए आत्मीयता बनाये रखूँगा।
- पत्नी को मित्र बनकर रहूँगा और पूरा–पूरा स्नेह देता रहूँगा, साथ ही सहनशील और मधुरभाषी बनकर रहूँगा।
- पत्नी के लिए जिस प्रकार पतिव्रत की मर्यादा कही गयी है, उसी दृढ़ता से स्वयं पत्नी–व्रत धर्म का पालन करूँगा। अपने विचार एवं आचरण इसी मर्यादा के अनुरूप विकसित करूँगा।
- गृह व्यवस्था में धर्मपत्नी को प्रधानता दूँगा। आमदनी और खर्च में, अपनी शक्ति और साधन आदि को पूरी ईमानदारी से लगाता रहूँगा।
- अपनी ओर से श्रेष्ठ व्यवहार बनाए रखने का पूरा–पूरा प्रयत्न करूँगा। मतभेदों और भूलों का सुधार शान्ति के साथ करूँगा। किसी के सामने पत्नी को अपमानित नहीं करूँगा।
- पत्नी के असमर्थ हो जाने पर भी, अपने सहयोग और कर्तव्यपालन में रत्तीभर भी कमी न रखूँगा, ऐसा विश्वास दिलाता हूँ।

## वधू की प्रतिज्ञाएं

**मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि–**

- अपने जीवन को पति के साथ मिलाकर सुखी जीवन का निर्माण करूँगी। इस प्रकार हमेशा सच्चे अर्थों में धर्मपत्नी बनकर रहूँगी।
- पति के परिवार के परिजनों को एक ही शरीर के अंग मानकर चलूँगी। सभी के साथ शिष्टाचार बरतूँगी। बड़ों को सम्मान और छोटों को स्नेह देने में प्रमाद न होने दूँगी।
- पति की प्रगति में समुचित योगदान देती रहूँगी। साधना–सेवा जैसे कार्यों में पति के लिए बाधक नहीं सहायक बनूँगी। आलस्य को छोड़कर परिश्रमी स्वभाव बनाऊँगी। स्वच्छता व्यवस्था एवं अन्य कार्यों को पूरी तत्परता से सम्भालूँगी।
- पतिव्रत धर्म का पालन करूँगी। अपने विचार एवं आचरण इसी मर्यादा के अनुरूप विकसित करूँगी। पति के पति श्रद्धाभाव बनाए रखकर सदैव उनके अनुकूल रहूँगी। छल–कपट न करूँगी।
- सेवा, स्वच्छता, प्रिय भाषण जैसे अभ्यास बढ़ाती रहूँगी। इस प्रकार सदा सबको प्रसन्नता देने वाली बनकर रहूँगी। ईर्ष्या, द्वेष, चुगली, अनावश्यक वार्तालाप जैसे दोषों से बचकर रहूँगी।
- कम खर्च में घर का संचालन करूँगी, फैशन एवं फिजूलखर्ची से बचूँगी। पति के असमर्थ हो जाने पर भी प्रसन्नतापूर्वक सद्गृहस्थ के अनुशासन का पालन करूँगी।
- मतभेद भुलाकर सेवा–साधना करते हुए जीवन भर सक्रिय रहूँगी। कभी भी पति का अपमान न करूँगी।
- प्रतिफल की आशा किये बिना हमेशा अपने कर्तव्यों का पालन करूँगी।

# आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन

**दिनांकः 24.04.2020 (वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया) – अक्षय तृतीया मथुरा (उ0प्र0)**

बन्धुवर,

आज प्रत्येक समाज में दहेज रूपी दानव ने अपने पैर जमा रखे हैं, जिससे अपना समाज भी अछूता नहीं है। दहेज के इस दानव को परास्त करने का एक ही उपाय है, सामूहिक विवाह बृजस्थ मैथिल ब्राह्मण महासम्मेलन–शाखा मथुरा गत 5 वर्षों से आदर्श सामूहिक विवाह करती आ रही है, इसी क्रम में उक्त आदर्श सामूहिक विवाह का आयोजन है, आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। आइये हम सब मिलकर, अपना अमूल्य समयदान एवं अंशदान देकर समाज की बेटियों के हाथ पीले कर इस आयोजन को सफल बनावें।

**आपसे अपेक्षाएंः–**

1– आप वर–कन्याओं की जोड़ी बनवाकर संस्था के कार्यालय में 10.04.2020 तक अवश्य पंजीकरण करावें। पंजीकरण शुल्क वर पक्ष को 11000/–रू0 व कन्या पक्ष का 5100/–रू0। वर की आयु 21 वर्ष व कन्या पक्ष की आयु 18 वर्ष। वर–कन्या के आधार कार्ड की फोटो कॉपी भी जमा करना आवश्यक है।

2– हिन्दू धर्म शास्त्रों में दान का बहुत महत्व है। विवाह संस्कार में कन्याओं का कन्यादान करना एक पुनीत कार्य है। सामूहिक विवाह आयोजन मथुरा, आगरा, अलीगढ़, हाथरस, फरीदाबाद, दिल्ली, जयपुर, अजमेर आदि क्षेत्र के विप्र बन्धुओं के आर्थिक सहयोग से ही होता है।

**विशेषः आपके द्वारा दिए गए दान से कन्याओं को विदाई के समय पर सुसज्जित डबलबैड, अलमारी, बर्तन, वस्त्र, लहंगा, चुन्नी, वायना आदि दिया जाता है। संस्कार पूर्णतः शास्त्रोक्त व विद्वान मैथिल विप्रों से कराया जाता है।**

आपसे पुनः आग्रह के साथ अपने क्षेत्रों से जोड़ें बनवाएं, अधिकाधिक आर्थिक सहयोग करें व सपरिवार कार्यक्रम में भाग लेकर अनुग्रहीत करें।


हीरालाल शर्मा– से0नि0 प्रधानाचर्य वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री बृजस्थ मैथिल ब्राह्मण महासम्मेलन, मथुरा। मोः 9411086083
मोः 9410038311, 9411086083, 8630285841, 9368414775


---

**सम्मानीय विप्र बन्धुओं, आपका अपना मिथिला ग्राम कौन सा है, आप मिथिला से कब आकर बृज में बसे तथा वर्तमान तक अपना पूर्ण वंश विवरण, जिसमें गोत्र, खेडा, आस्पद, प्रवर, वेद, शिखा इत्यादि सम्मिलित हैं, मय फोटो के मैथिल ब्राह्मणों की वेबसाइट www.maithilbrahminmahasabha.in पर अपलोड करायें, ताकि सम्पूर्ण भारतवर्ष में मैथिल ब्राह्मणों की सम्पूर्ण जानकारी जनसामान्य तक पहुंच सके।**

**मैथिल ब्राह्मणों के You Tube Channel- Maithil Brahmin को अवश्य Subscribe करें, ताकि मैथिल ब्राह्मणों का मिथिला से बृज में आने तक का विवरण, वीडियो सहित आप तक पहुँच सके।**

SUBSCRIBE

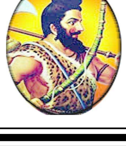

MAITHIL BRAHMIN

YouTube

# समाचार

मैथिल ब्राह्मण महासभा ने मकर सक्रान्ति पर्व उल्लासपूर्वक मनाया। 19 जनवरी रविवार को मैथिल ब्राह्मण महासभा ने प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्रपाल शास्त्री की अध्यक्षता में मकर सक्रान्ति पर्व पर खिचड़ी भोज एवं जरूरतमंद लोगों को कम्बल वितरण कर मनाया।

मुख्य अतिथि मनोज शर्मा उपाध्यक्ष भा0ज0पा0 महानगर ने अपने वक्तव्य पर समरसता, सरलता एवं शालीनता के लिए महासभा की सराहना की। विशिष्ट अतिथिजन हरेन्द्र गौड़ ने कहा कि समाज में ऐसे रचनात्मक कार्य समय–समय पर होने चाहिए। दूसरे विशिष्ट अतिथि डा0 मानवेन्द्र प्रताप सिंह ने ऐसे कल्याणकारी कार्य करने के लिए मैथिल ब्राह्मण समाज एवं महासभा की भूरि–भूरि प्रशंसा की। संस्थापक जयप्रकाश शर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि अन्य ऋणों की भांति मनुष्य के ऊपर अपने समाज का भी ऋण होता है। महासभा भी उपकार नहीं कर रही, वह तो सामाजिक ऋण को चुकता कर रही है। उन्होने कहा कि खिचडी भोज समानता एवं समरसता का प्रतीक है। आचार्य पूरन चन्द्र शास्त्री ने कहा कि सूर्य उत्तरायण होते ही अधिक उर्जा प्रदान करते हैं। प्रदेशाध्यक्ष महेन्द्र पाल शास्त्री ने सभी आगन्तुक एवं अतिथियों का आभार प्रकट किया।

सभा का संचालन महामंत्री विजय प्रकाश शर्मा ने किया। कार्यक्रम में मदन मिश्रा, योगेन्द्र शर्मा, मुकेश शर्मा, शंकरलाल शर्मा, मुकेश भारद्वाज, राजू पंडित, बबलू शर्मा, वेदप्रकाश शर्मा, चन्द्रदत्त वैद्यजी, अनुराग पाराशर आदि लोग उपस्थित रहे।

# समाचार

पं0 रघुवीर सहाय शर्मा ''मैथिलेन्दु'' मुख्य अतिथि को सम्मानार्थ शॉल एवं पट्टिका भेंट करते हुए श्री ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण समिति के अध्यक्ष रमेश चन्द्र शर्मा

आपने मिथिला से वर्तमान तक का सफर कैसे तय किया, अपना पूर्ण वंश विवरण (बीजीपुरूष, खेड़ा, गोत्र इत्यादि) मय फोटो मैथिल ब्राह्मणों की वेबसाइट www.maithilbrahminmahasabha.in पर अपलोड करा सकते हैं, ताकि आपका इतिहास इंटरनेट पर दर्ज हो सके, जिसे सम्पूर्ण भारतवर्ष देखे।

विशिष्ट अतिथि पं0 सरोज कुमार (आगरा) का मंदिर के द्वारा पर स्वागत करते बालक वृंद तथा मंदिर के मुख्य डगर को निहारते मुख्य अतिथि पं0 रघुवीर सहाय शर्मा ''मैथिलेन्दु''

मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथ, अध्यक्ष व अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में वरिष्ठ स्वजातीय महिला का सम्मान करती महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती प्रवीणा झा।

## जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

भक्ति शर्मा
(05 फरवरी)

विवेक पण्डित
(17 फरवरी)

विनोद पण्डित
(15 फरवरी)

मोहित भारद्वाज
(28 जनवरी)

अमन मिश्रा
(24 फरवरी)

यदि आप पत्रिका के मासिक सदस्य हैं तो आप भी मार्च माह में होने वाले जन्मदिन का समाचार, पत्रिका में निःशुल्क प्रकाशन हेतु अपना फोटो नाम व दिनांक हमें व्हॉटसअप करें:–

(मैथिल ब्राह्मण संदेश ग्रुप) 9259647216

SUBSCRIBE

MAITHIL BRAHMIN

YouTube

## समाज सेवा छोड़ो या नाराज होना छोड़े

- मेरा फोटो नहीं छपा, मेरा निमंत्रण पत्रिका में नाम नहीं था, इसलिए मैं नहीं आया।
- मुझे उसमें कुछ मिलने वाला नहीं था, मुझे कोई पद नहीं मिला, इसलिए मैं नहीं आया।
- मुझे कोई सुनता नहीं है, मुझे स्टेज पर नहीं बैठाया, इसलिए मैं नहीं आया।
- मेरा सम्मान नहीं किया, कोई सुझाव लेते नहीं है, इसलिए मैं नहीं आया।
- टाईम नहीं मिल रहा, मुझे बोलने का मौका नहीं दिया, इसलिए मैं नहीं आया।
- सभी काम मुझे सौंपा जाता है, इसलिए मैं नहीं आया।
- बार-बार आर्थिक बोझ मुझ पर डाल दिया जाता है, इसलिए मैं नहीं आया।

श्रीमती प्रियंका भारद्वाज एवं श्री तरून भारद्वाज
यमुना ब्रिज स्टेशन, आगरा- 282006
मैरिज ऐनीवर्सरीः 28.02.2017

श्रीमती पूजा मिश्रा एवं श्री राहुल मिश्रा
मकान नं. 912, ज्वालापुरी, अलीगढ़-202001
मैरिज ऐनीवर्सरीः 18.02.2017

शादी की वर्षगाँठ का समाचार, पत्रिका में निःशुल्क प्रकाशन हेतु अपना फोटो नाम व दिनांक हमें व्हॉटसअप करें:–

# मैथिल ब्राह्मण सन्देश वार्षिक सदस्य

निम्न वार्षिक सदस्य अपना पूर्ण वंश विवरण मय फोटो तैयार कराकर (जिसमें आपका गोत्र, बीजी पुरूष, आस्पद इत्यादि) वेबसाइट पर अपलोड कराने हेतु अपने क्षेत्र के प्रमुख से सम्पर्क करें:–

## जनपद-फिरोजाबाद

1– **श्री (पं0) गौरीशंकर शर्मा,** इन्द्रा नगर, जलेसर रोड, फिरोजाबाद 9759503154
2– **श्री (पं0) कृष्णकान्त शर्मा,** सरस्वती नगर, जलेसर रोड, फिरोजाबाद 9319777025
3– **श्री (पं0) रहीस पाल शर्मा,** गली नं. 8, महावीर नगर, फिरोजाबाद 9045415885
4– **श्री (पं0) सुभाष बाबू शर्मा,** झील की पुलिया, जले. रोड, फिरोजाबाद 8006606204
5– **श्री (पं0) देवेन्द्र मिश्रा,** कृष्ण नगर (टापा कलां), जले. रोड, फिरोजाबाद 9627578517
6– **श्री (पं0) सत्यप्रकाश शर्मा,** ब्रह्मपुरी (रहना), फिरोजाबाद 9927462182
7– **श्री (पं0) जगदीश प्रसाद शर्मा,** गली 5, महावीर नगर, फिरोजाबाद 7599087685
8– **श्री (पं0) प्रेम प्रकाश शर्मा,** झील की पुलिया, जले. रोड, फिरोजाबाद 9045175567
9– **श्री (पं0) विजयपाल शर्मा,** नई आबादी (रहना), फिरोजाबाद 9837026037
10–**श्री (पं0) अतुल शर्मा,** देवकी नगर, फिरोजाबाद
11–**श्री (पं0) संजय शर्मा,** मथुरा नगर, फिरोजाबाद
12–**श्री (पं0) राकेश मिश्र,** लेवर कॉलोनी, फिरोजाबाद 9917373032
13–**श्री (पं0) रामकुमार शर्मा,** जैन नगर, फिरोजाबाद 7409939993
14–**श्री (पं0) बिहारी लाल,** सुदामा नगर, फिरोजाबाद 8439466312

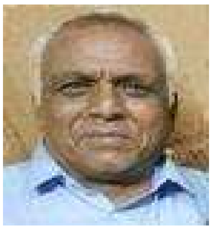

–द्वारा–
श्री हरीशकंर मिश्रा
9927383141

## जनपद-अलीगढ़

1– **श्री महीपाल शर्मा,** हरचंदपुर ककेथल, अतरौली, अलीगढ़ 9639901259
2– **श्री सोनेन्द्र भारद्वाज,** होली चौक पला साहिबाबाद, अलीगढ़
3– **श्री सुनीत शर्मा उधौ,** होली चौक पला साहिबाबाद, अलीगढ़ 9311881852
4– **श्री रमेश चन्द्र शर्मा,** गली नं0 7, होली चौक पला साहिबाबाद, अलीगढ
5– **श्री मनोज शर्मा,** डोरी नगर, बौद्व बिहार, अलीगढ 7500396631
6– **श्रीमती शोभा शर्मा,** दुर्गा बिहार, मरघट के पीछे, अलीगढ़ 8755266322
7– **श्री कैलाश चन्द्र शर्मा,** न्यू गोपालपुरी, अलीगढ़ 9259321106

–द्वारा–
डा0 नवनीत शर्मा
9219205356

## जनपद-आगरा

1– **श्री आनन्द शर्मा,** आगरा
2– **श्री राकेश शर्मा,** आगरा।
3– **श्री मुकेश शर्मा,** आगरा।
4– **श्री मुनीश शर्मा,** कूचा शालूराम, आगरा। 9358528703
5– **श्री योगेश शर्मा,** आगरा। 9897231912
6– **श्री प्रवीन शर्मा,** अवधपुरी, अलीगढ़ 9456674784
7– **श्री शिवचरन लाल शर्मा,** विष्णु कॉलोनी, आगरा 9897112668

–द्वारा–
श्री सत्यप्रकाश शर्मा
9219636927

1– **श्री विपिन शर्मा,** न्यू कृष्णा नगर, आगरा 9012675131
2– **श्री ओमवीर शर्मा,** न्यू कृष्णा नगर, आगरा 9758919162
3– **श्री शिवकुमार शर्मा,** संतोष नगर, नराइच, आगरा।
4– **श्री रवी कन्हैया शर्मा,** सती नगर, आगरा। 9049515445
5– **श्री प्रेमशंकर शर्मा,** नरायच आगरा।
6– **श्री पं0 देवीचरण शर्मा, ज्योतिषाचार्य,** दयालबाग, आगरा 9458061190
7– **श्री श्यामबाबू शर्मा,** खंदारी आगरा। 9760371199
8– **श्री डॉ0 योगेन्द्र कुमार शर्मा,** ट्रान्सयमुना, आगरा 8864896113

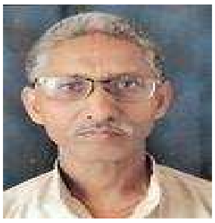

–द्वारा–
श्री राजेन्द्रपाल शास्त्री
9760746099

# जिनके प्रयास से, पत्रिका आप तक पहुँचती है, ऐसे सम्मानीय विप्र बन्धु

## महानगर–अलीगढ़

**कृष्णापुरी**
राजकुमार शर्मा
9528925156

**भगवान नगर**
विजय प्रकाश शर्मा
9058841900

**ज्वालापुरी**
वेदप्रकाश शर्मा
9358256932

**सरोज नगर**
पूरन चन्द्र शास्त्री
9412442343

**माली नगला**
विक्रम पाण्डेय
7417302188

**रावण टीला**
प्रवेश कुमार शर्मा
9897671421

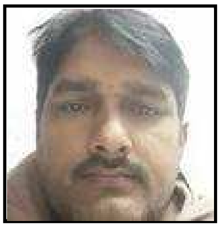
**टीका.कॉलोनी**
ललित शर्मा
9568309860

**बेगम बाग**
भूपेश कुमार शर्मा
9258862183

**नगला मसानी**
पं0 मुकेश भारद्वाज
8410158237

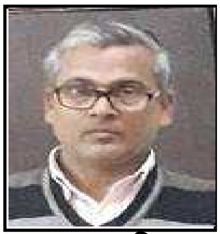
**पला साहिबा.**
डा0नवनीत शर्मा
9219205356

**मिथिलापुरी**
पं0 महेश चंद्र झा
9897686401

**न.डालचन्द्र**
रविनन्दन शर्मा
9457006045

**विकास नगर**
जगदीश प्रसाद शर्मा
8923124025

**बाबा कॉलोनी**
विनोद शर्मा
9412819228

**कुंवर नगर**
महेश चंद्र शर्मा
9258427346

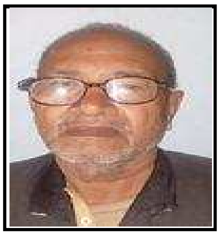
**सुदामापुरी**
देवकीनन्दन पाठक
9458408006

## विभिन्न जनपद

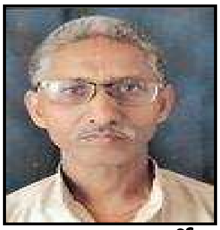
**आगरा पूर्वी**
राजेन्द्र पाल शास्त्री
9760746099

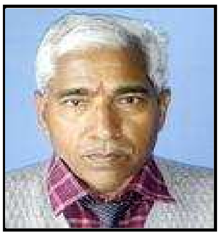
**मथुरा**
के0एस0 शर्मा
8630285841

**आगरा पश्चिमी**
मुनीश कुमार शर्मा
9358528703

**हाथरस**
उपेन्द्र झा 'मैथिल'
9837484645

**दिल्ली**
रमेश चन्द्र शर्मा
9312942251

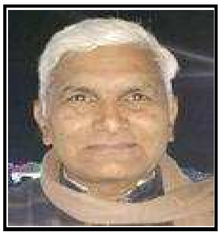
**एटा (विशाबर)**
कोमल प्रसाद
9719247433

**फरीदाबाद**
राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
9810195234

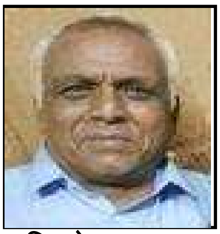
**फिरोजाबाद**
हरीशंकर मिश्रा
9927383141

**दिल्ली (अध्या.नगर)**
किशोर मिश्रा
9811563927

**एटा (अवागढ़)**
अशर्फी लाल शर्मा
6396959575

**आगरा उत्तरी**
सत्यप्रकाश शर्मा
9219636927

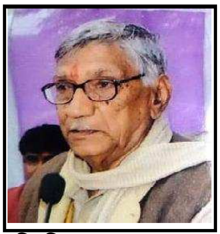
**विभिन्न प्रान्त**
रघुवीर सहाय शर्मा
8077033429

# वर-कन्या सूची

1. कु0 चेतना (मांगलिक) पुत्री श्री चन्द्रपाल शर्मा, जन्मतिथिः 06.07.1991, शिक्षाः एम0ए0 (समाज शास्त्र), कद–5'3'', खेडा–सुसानिया ननसार खेडा–राजौरिया, अलीगढ। सम्पर्क मोः 8410158237
2. आशीष, जन्मतिथिः 1995, , जॉबः शिक्षक, सरकारी केन्द्रीय विद्यालय, खेडा–इसौदाबाद वमनखेरिया, आगरा। मोः 8859146596, 9897858622
3. कमल पुत्र श्री कीर्तिलाल शर्मा, शिक्षाः ग्रेजुएट, जॉबः नगर निगम, वाटर प्लांट, सती नगर, आगरा। मोः 9719015555
4. आकाश पाठक पुत्र श्री राधारमन पाठक, शिक्षाः ग्रेजुएट, निवासी– श्याम नगर, आगरा–6। मोः 9458737057
5. संचित पुत्र डा0 उमेश चन्द्र शर्मा, जन्मतिथिः30.07.1991, शिक्षाः बी0टैक (मैकेनिकल), एमबीए (एलएससीएम), जॉब असिस्टैंट मैनेजर इन फ्यूचर सप्लाई चैन,कदः 6', खेडा– खास लोहवन, ननसार जलेसरिया, पता–ए–103,ग्रीन पार्क अपार्टमैंट, अलीगढ। मोः 8218741141, 9410200425
6. सपना झा पुत्री श्री तिलकचन्द्र झा, जन्मतिथिः 09.07.1986, शिक्षाः बी0ए0, जॉबः मैडीकल कॅलेज, कदः 5'4'' पता–जबलपुर। मोः 7489308074
7. राहुल शर्मा पुत्र श्री पी0सी0 शर्मा, जन्मतिथिः 01.10.1990, शिक्षाः बी0ए0 +आईटीआई, गोत्र–भारद्वाज, जॉबः पोशाक व्यवसाय, कदः 5'5'', पता–मकान नं. 1, एसकुमार, स्कूल में, माहौर नगर, आगरा। मोः 9411997989
8. विवेक शर्मा पुत्र श्री कुलदीप चन्द्र शर्मा, जन्मतिथिः 11.08.1990, शिक्षाः एमकॉम, जॉबः उद्यान विभाग में संविदा पर, कदः 5'3'', पता–नामनेर, आगरा। मोः 7983609942
9. गुलशन झा पुत्र श्री कुलदीप झा, जन्मतिथिः 10.09.1992, शिक्षाः एमकॉम, गोत्र–भारद्वाज, जॉबः पारिवारिक प्रतिष्ठान, कदः 5'6'', पता–झांसी। मोः 9415230975
10. अजीत कुमार शर्मा पुत्र श्री उमाशंकर शर्मा, जन्मतिथिः 23.09.1990, शिक्षाः बीकॉम, खेडा–चिरौईया, जॉबः एचडीएफसी बैंक, कदः 5'8'', पता–मुम्बई। मोः
11. मनीष कुमार झा पुत्र श्री राजकुमार झा, जन्मतिथिः 08.07.1988, शिक्षाः हाईस्कूल, जॉबः प्राईवेट कम्पनी में जॉब, पता–ग्वालियर (म0प्र0)। मो 9993478962
12. विवेक वत्स पुत्र श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा, जन्मतिथिः 08.11.1987, शिक्षाः बीकॉम, जॉबः क्लर्क उपकार प्रकाशन, कदः 5'8'' आगरा पताः–आगरा। मोः 7310747520
13. गीत शर्मा (मांगलिक) पुत्र श्री सुनील कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 09.05.1988, गोत्र–वशिष्ठ, शिक्षाः बीए, जॉबः वीवो मोबाईल, कदः 5'8'', पताः जयपुर। मोः 9521799290
14. अनुराग मिश्रा पुत्र श्री पी0के0 मिश्रा, जन्मतिथिः 26.07.1993, शिक्षाः एमबीए, गोत्र–शांडिल्य, जॉबः टाटा मोटर्स, कदः 5'6'' पताः दिल्ली। मोः 8791505041
15. मोहिनी वशिष्ठ पुत्री श्री नत्थूलाल शर्मा, जन्मतिथिः 04.08.1995, शिक्षाः एमए, गोत्र–वशिष्ठ, कदः 5'3'', पताः बदायूं। मोः 7983860047
16. डिम्पल शर्मा पुत्री श्री सन्तोष कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 24.11.1994, शिक्षाः एमकॉम बीएड, जॉब– टीचिंग, कदः 5'3'' पता– अजमेर। मोः 9828638519
17. दीक्षा शर्मा पुत्री श्री नवीन कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 04.12.1992, शिक्षाः बीटैक, जॉबः इलै0इंजीनियर दिल्ली मेट्रो, कदः 5'3'', पता– आगरा। मोः 7983502355
18. मोहित शर्मा पुत्र श्री संतोष कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 05.02.1988, शिक्षाः एमएससी, जॉबः अध्यापन कार्य, पता–बीकानेर। मोः 7725912222
19. आदित्य शर्मा पुत्र श्री राजेश शर्मा, जन्मतिथिः 21.03.1993, शिक्षाः बीटैक, जॉबः बिजनीसमैन, पता–मैनपुरी। मोः 9412186488
20. दीपक शर्मा पुत्र श्री जैनेन्द्र कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 15.10.1989, शिक्षाः बीए, जॉबः बिजनीस, पता–ज्वालापुरी, अलीगढ। मोः 9720273027

21. रवि शर्मा पुत्र श्री रामप्रकाश शर्मा, जन्मतिथिः 12.04.1996, शिक्षाः हाईस्कूल, जॉबः हार्डवर्क ठेकेदार, पता- आगरा। मोः 7747958410
22. हितेश कुमार शर्मा पुत्र श्री रूपकुमार शर्मा, जन्मतिथिः 04.10.1988, शिक्षाः बीकॉम, जॉबः जेके टायर्स, पता- गुजरात। मोः 9737540448
23. दीक्षा शर्मा पुत्री श्री रामकिशोर भगवानदास शर्मा, जन्मतिथिः 16.04.1996, शिक्षाः हाईस्कूल, पता- गुजरात। मोः 9624538238
24. अमित कुमार शर्मा पुत्र श्री एमपी शर्मा, जन्मतिथिः 09.08.1986, शिक्षाः बीटैक, जॉबः सर्विस, पता-आगरा। मोः 9624388044
25. कृतिका शर्मा पुत्र श्री गोपाल शर्मा, जन्मतिथिः 09.05.1986, शिक्षाः पोस्ट ग्रेजुएट, जॉबः प्राईवेट स्कूल में अध्यापन कार्य पता- अजमेर। मोः 9828282864
26. विशेष मोहन शर्मा पुत्र श्री ललित मोहन शर्मा, जन्मतिथिः 13.12.1992, शिक्षाः एमएससी, जॉबः एसएससी द्वारा टैक्स असिस्टेंट, पता-आगरा। मोः 7520053395
27. अंकित शर्मा पुत्र श्री गिरीश चन्द्र शर्मा, जन्मतिथिः 26.02.1991, शिक्षाः एमटैक, जॉबः असिस्टैंट प्रोफेसर, कदः 5'3'' पता- बरेली। मोः 9411205030
28. गरिमा शर्मा पुत्री श्री गिरीश चन्द्र शर्मा, जन्मतिथिः 02.02.1988 शिक्षाः बीटैक, जॉबः जू0इं0, कदः 5'3'', पता-आगरा। मोः 9411205030
29. सुमित कुमार शर्मा पुत्र श्री बलवीर शर्मा, जन्मतिथिः 16.04.1991, शिक्षाः बीटैक, जॉबः असिस्टैट मैनेजर, कदः 5'8'', पता-हाथरस। मोः 8057551144
30. मोहिनी शर्मा पुत्री श्री नेत्रपाल शर्मा, जन्मतिथिः 13.09.1996, शिक्षाः एमकॉम, कदः 5'3'', पता-पला रोड अलीगढ। मोः 9412370841
31. राहुल मैथिल पुत्र श्री राजू मैथिल, जन्मतिथिः 05.02.1995, शिक्षाः बीकॉम, कदः 5'4'', जॉबः एमपी ऑनलाईन शाप, पता- राईसन मध्य प्रदेश। मोः 9179219451

## - लेखक बन्धुओं से निवेदन -

- पत्रिका में व्यक्तिगत अथवा किसी संगठन सम्बन्धी आलोचनात्मक लेख नहीं छापे जायेंगे, केवल रचनात्मक, सकारात्मक एवं समाजोत्थान सम्बन्धी लेख ही छापे जावेंगे।
- बाल, महिला, स्वास्थ्य, योग, संस्कारप्रद कहानी, प्रेरक प्रसंग वाले लेख पत्रिका के व्हॉटसअप नं. 9259647216 पर भेजने के बाद पत्रिका कार्यालय के मोबाईल नं. 9760689055 पर अवश्य सूचित करें।
- मिथिला से लेकर बृज तक प्रवास, इतिहास, गोत्र, खेड़ा आदि विषय के लेख पत्रिका में भेजने हेतु पत्रिका के व्हॉटसअप नं. 9259647216 पर भेजकर श्री जयप्रकाश शर्मा प्रधान सम्पादक एवं संयोजक ''इतिहास लेखन समिति'' के अनुमोदन के बाद ही छापे जाते हैं, इस प्रक्रिया में 1 माह का समय लग जाता है, अतः लेख शीघ्र छापने का आग्रह न करें।
- जो लेख नहीं छापे जा सके, उनमें हमारी मजबूरी ही समझें, इस स्थिति में आपका क्रोधित होना स्वाभाविक है, अतः क्षमा करने का प्रयास करें।
- सम्पादक मण्डल की ओर से पत्रिका को जनपयोगी बनाने का प्रयास किया है, फिर भी पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु आपके सुझाव आमन्त्रित हैं।